विभागीय गृह पत्रिका

सीमा भारती

वर्ष : 2025-2026

अंक : 30

मुंबई सीमाशुल्क, अंचल-I

नवीन सीमाशुल्क भवन, बेलार्ड पियर, मुंबई-400 001

Mumbai Customs Zone - I

New Custom House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001

दिनांक 28.10.2024-03.11.2024 तक आयोजित सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम की झलकियाँ

विभागीय गृह पत्रिका

सीमा भारती

वर्ष : 2025-26 अंक : 30

संरक्षक

नीतीश कुमार सिन्हा
मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क मुंबई, अंचल - I

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक : प्रद्युम्न त्रिपाठी
आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य/आयात-I)

प्रबंध संपादक : मोहन सिंह दोराई
अपर आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य)

संपादक : जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहायक

पौर्णिमा एन. सालवे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

धर्मवीर चौहान
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मनीषा पांचाल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अशोक पीपलीवाल
कार्यकारी सहायक

उद्देश्य सचान
आशुलिपिक

इस पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ, कविताएँ और अन्य साहित्यिक रचनाएँ लेखकों की कल्पना और विचार पर आधारित है। संपादक या प्रकाशक का किसी भी रचना में व्यक्त किए गए विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
(केवल विभागीय प्रयोग के लिए)

मुंबई सीमाशुल्क अंचल - I
नवीन सीमाशुल्क भवन, बेलार्ड पियर, मुंबई- 400 001

क्र.	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
❖	संरक्षक की कलम से	नीतीश कुमार सिन्हा	03
❖	प्रधान संपादक की कलम से	प्रद्युम्न कुमार त्रिपाठी	04
❖	शुभकामना संदेश, आयुक्त, सीमाशुल्क (निर्यात)	असलम हसन	05
❖	शुभकामना संदेश, आयुक्त, सीमाशुल्क (आयात-II)	अमरेन्द्र नारायण	06
❖	शुभकामना संदेश, आयुक्त, आयुक्तालय (सी ए ए आर)	प्रभात क. रामेश्वरम	07
❖	शुभकामना संदेश, आयुक्त, आयुक्तालय (लेखा परीक्षा)	श्रद्धा जोशी शर्मा	08
❖	शुभकामना संदेश, आयुक्त, आयुक्तालय (अधिनिर्णयन)	देवेन्द्र सिंह राणा	09
❖	शुभकामना संदेश, आयुक्त, आयुक्तालय (अपील)	सत्यदीप महापात्र	10
❖	प्रबंध संपादक की कलम से	मोहन सिंह दोराई	11
❖	संपादक की कलम से	जागृति एच. जोशी	12
❖	सोपारा (मुंबई): भारत का एक प्राचीन बंदरगाह	असलम हसन	13
❖	आलू, आलू और आलू	पंकज झा	22
❖	गणतंत्र दिवस की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	24
❖	स्वतंत्रता दिवस की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	25
❖	राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को प्रभावी करने के लिए अत्यावश्यक बातें	पौर्णिमा एन. सालवे	26
❖	कहानी अपनी सी	विशाखा निखिल फड़के	30
❖	विरक्ति की शिला पर	पूनम राजपूत	31
❖	सदस्य सीबीआईसी श्री सुरजीत भुजबल की सीमाशुल्क, मुंबई में भ्रमण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	32
❖	सदस्य सीबीआईसी श्री योगेन्द्र गर्ग की सीमाशुल्क, मुंबई में भ्रमण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	33
❖	संस्मरण	आर एन पाठक	34
❖	विविध अधिकारियों के विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात), मुंबई में काम करने के अनुभव	अमन कुमार, शिव शंकर राम दीपा कोशी, पवन कुमार दहिया	36 37
❖	मेरे फेसलेस मूल्यांकन के अनुभव	अनिल कुमार मीणा, मयंक कुमार	38
❖	मेरे कार्यालय का अनुभव	उदय कुन्दर	40
❖	गुजरता वक्त	देवेन्द्र कुमार मीणा	41
❖	हिंदी पखवाड़ा 2024-2025 की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	42
❖	कृत्रिम बुद्धिमता	धर्मवीर चौहान	45
❖	सूखे पेड़, प्रश्न : एक गीत, गजल	चन्दन बिष्ट	46
❖	सीमाशुल्क के खेल जगत से	सीएचएस अनुभाग	49
❖	बच्चों की कलाकृतियां	चीकू चौहान, हृदांश एवं हृदवी	50
❖	उड़ान	उद्देश्य सचान	52
❖	जैविक घड़ी (बायो-क्लॉक) लंबी उम्र और स्वस्थ जीवन का अदृश्य रहस्य	पौर्णिमा एन. सालवे	53
❖	योग दिवस की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	55
❖	चक्रव्यूह, दरवाजा और शिकायत	पार्थ सारथी गौड़	56
❖	नवीन सीमाशुल्क की झलकियाँ	आलोक कुमार	

सत्यमेव जयते

नीतीश कुमार सिन्हा
(मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क)

संरक्षक की कलम से...✍

अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'सीमा भारती' हिन्दी पत्रिका केन्द्रीय सरकार एवं राजभाषा विभाग, मंत्रालय के आदेशों/ निर्देशों का पालन करती हुई 30वें अंक तक आ पहुंची है। 'सीमा भारती' हिन्दी पत्रिका राजभाषा के प्रचार/प्रसार के कार्य में निरंतर अपना सहयोग प्रदान कर रही है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि इसमें कार्यालय के अधिकारियों की नवीनतम तथा ज्ञानवर्धक रचनाएं प्रकाशित की जाए। इससे उनकी रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्राप्त होता है। विचारों के आदान प्रदान का सीमा भारती एक सशक्त माध्यम है।

हिन्दी जनसामान्य की भाषा है। भाषाई विविधता के बीच एकता का सूत्र हिंदी ही है, जो भारत की सबसे प्रमुख भाषाओं में शामिल है। हिंदी भाषा और साहित्य व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हुआ है। उसमें हर्ष, विषाद, संवेदना सभी प्रकार के भाव निहित होते हैं। हिंदी साहित्य मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करने में सक्षम है। पत्रिका के सृजन में अधिकारियों/कर्मचारियों की इन्हीं संवेदनाओं के प्रकटीकरण का प्रयास किया गया है। परिणामस्वरूप सीमाशुल्क जैसे राजस्व कार्यालय में शुष्क भाव से कार्य करते हुए भी आयुक्तालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की प्रतिभा को निखारने का अनुपम अवसर 'सीमा भारती' हिन्दी पत्रिका प्रदान करती है।

'सीमा भारती' का यह 30वां अंक प्रकाशित हो रहा है एवं इसमें सभी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भविष्य में भी 'सीमा भारती' इतने ही लगन और उत्साह से इस कार्य को अंजाम देती रहेगी और आप सबका सहयोग भी इसी तरह मिलता रहेगा, यही कामना है।

मैं इस वैचारिक अभिव्यक्ति के सफलतम सम्पादन हेतु संरक्षक के स्तर पर संयोजक,संपादक मण्डल तथा सभी रचनाकारों के मूल्यवान योगदान को बधाई देता हूँ और आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

नीतीश कु. सिन्हा
मुख्य आयुक्त सीमाशुल्क

सत्यमेव जयते

प्रद्युम्न त्रिपाठी
(आयुक्त)

प्रधान संपादक की कलम से...✍

सीमाशुल्क आयुक्तालय, मुंबई अंचल-I की गृहपत्रिका 'सीमा भारती' का 30वां अंक प्रकाशित करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह न केवल सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वरन इनके माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर भी मिलता है। आयुक्तालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक रचनाएं देकर पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाया है।

हमें गर्व है कि हम आयुक्तालय का अधिकतम कार्य हिन्दी में सम्पन्न करते हुए राजभाषा विभाग के आदेशों का पालन शत-प्रतिशत कर रहे हैं तथा भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्यालयीन कार्य को निष्पादित कर रहे हैं।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मण्डल के अन्य सदस्यों तथा लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

प्रद्युम्न कुमार त्रिपाठी
आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य/आयात-I)

सत्यमेव जयते

असलम हसन
(सीमाशुल्क, आयुक्त)

शुभकामना संदेश

'सीमा भारती' पत्रिका के 30वें अंक का प्रकाशन हम सबके लिए हर्ष का विषय है। हिन्दी भाषा को समर्पित यह पत्रिका हिन्दी भाषा और साहित्य को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत कर रही है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विभाग में हिन्दी के प्रति जागरूकता एवं रचनाशीलता फैलाने में यह एक सराहनीय प्रयास है। हिन्दी एक संपर्क भाषा के रूप में पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का काम करती है। हमें हिन्दी के साथ-साथ देश की हर भाषा का भी सम्मान करना चाहिए।

मैं 'सीमा भारती' के प्रकाशन से जुड़े हुए तमाम सदस्यों को शुभकामना देता हूँ और कामना करता हूँ कि आगामी वर्षों में भी 'सीमा भारती' का सतत प्रकाशन सफलतापूर्वक होता रहे।

असलम हसन
आयुक्त, सीमाशुल्क (निर्यात)

सत्यमेव जयते

अमरेन्द्र नारायण
(सीमाशुल्क आयुक्त)

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-I, अपनी वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका 'सीमा भारती' के 30वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी का हमारी राजभाषा के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान है। गृह पत्रिका न केवल राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देती है, बल्कि एक दूसरे के विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक सार्थक मंच भी प्रदान करती है।

प्रख्यात कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है- "हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।" भारत में हिन्दी भाषा सर्वाधिक मात्रा में बोली एवं समझी जाती है। यह हम सभी का उत्तरदायित्व है कि हम भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों और राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ स्वयं भी प्रतिदिन के दैनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

मुझे विश्वास है कि 'सीमा भारती' हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाती रहेगी. पत्रिका के सभी रचनाकारों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अमरेंद्र नारायण
आयुक्त, सीमाशुल्क (आयात-II)

सत्यमेव जयते

प्रभात क. रामेश्वरम
(सीमाशुल्क आयुक्त)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि सीमाशुल्क अंचल-I, मुंबई की गृहपत्रिका 'सीमा भारती' का वर्ष 2025-26 का 30वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका विगत तीन दशकों से विभागीय गतिविधियों, उपलब्धियों एवं सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का सशक्त माध्यम बनी हुई है।

'सीमा भारती' केवल विभागीय पत्रिका भर नहीं है, बल्कि यह हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक ऊर्जा, साहित्यिक संवेदना तथा सांस्कृतिक चेतना का प्रतिबिंब भी है। इसके माध्यम से विभागीय परिवार के सदस्य अपने विचार, अनुभव एवं प्रतिभा को साझा करते हैं, जिससे न केवल पारस्परिक संवाद सुदृढ़ होता है, बल्कि संगठनात्मक एकता और सहयोग की भावना को भी प्रोत्साहन मिलता है।

इस पत्रिका का 30वाँ अंक निश्चय ही एक मील का पत्थर है, जो इसकी निरंतरता, प्रासंगिकता और लोकप्रियता का प्रमाण है। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी अपने पूर्ववर्ती अंकों की भाँति ज्ञानवर्धक, मनोरंजक तथा प्रेरणादायी सिद्ध होगा और पाठकों को विभाग की प्रगति यात्रा, राजभाषा के संवर्धन तथा साहित्यिक योगदान से अवगत कराएगा।

इस अवसर पर मैं सम्पादक मण्डल एवं इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को हृदय से बधाई देता हूँ तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

प्रभात कमल रामेश्वरम
आयुक्त, सी ए ए आर

सत्यमेव जयते

श्रद्धा जोशी शर्मा
(सीमाशुल्क आयुक्त)

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मुंबई, सीमाशुल्क अंचल-I की विभागीय पत्रिका 'सीमा भारती' के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है। विभागीय पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। मैं आशा करती हूँ कि पत्रिका के रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक लेखों का यह संग्रह राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं सभी अधिकारियों/कार्मिकों में हिन्दी के प्रति रुझान बनाए रखने में अहम भूमिका निभाएगी। यह प्रयास अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक क्षमताओं के वर्धन में एक उचित मंच साबित होगा।

मुझे विश्वास है कि 'सीमा भारती' का यह अंक रोचक और ज्ञानवर्धक साबित होगा। हिन्दी में काम करना हम सभी का कर्तव्य है। मैं ज़ोन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करती हूँ कि अपने कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने का पूरा प्रयास करें।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं रचनाकारों, संपादक मण्डल एवं अन्य सभी सहयोगियों का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ। पत्रिका के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

श्रद्धा जोशी शर्मा
आयुक्त, सीमाशुल्क (लेखापरीक्षा)

सत्यमेव जयते

देवेन्द्र सिंह राणा
(सीमाशुल्क आयुक्त)

शुभकामना संदेश

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि हर साल की तरह इस साल भी भारत सरकार के गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने एवं इसका विस्तार करने के उद्देश्य से सीमाशुल्क अञ्चल-1 में 'सीमा भारती' का प्रकाशन होने जा रहा है।

यह कार्यालय में कार्यरत सभी सदस्यों की प्रतिभा को एक मंच पर लाने और विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। इसके अतिरिक्त यह राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सीमा भारती पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के सदस्यों में हिन्दी भाषा के प्रति एक उत्साह एवं सकारात्मक भाव उत्पन्न हुआ है। इसमें प्रकाशित रचनाकारों की रचनाएं एवं उनके प्रयास भी काफी सराहनीय है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और विभाग में कार्यरत सदस्यों में हिन्दी भाषा के प्रति जागरूकता फैलाने में भूमिका निभाती इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं ढेरों शुभकामना देता हूँ और इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

देवेन्द्र सिंह राणा

देवेन्द्र सिंह राणा
आयुक्त, सीमाशुल्क (अधिनिर्णयन)

सत्यमेव जयते

सत्यदीप महापात्र
(सीमाशुल्क आयुक्त)

शुभकामना संदेश

'सीमा भारती' पत्रिका न केवल सीमाशुल्क अंचल-I की गतिविधियों का दस्तावेज है, बल्कि यह हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी एक सशक्त माध्यम है। यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यभार की व्यस्तताओं के बीच हमारे कर्मचारी न केवल प्रशासनिक दायित्वों का कुशलता से निर्वहन कर रहे हैं, बल्कि अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक प्रतिभा को भी समय दे रहे हैं। यह संतुलन प्रेरणादायक है और विभागीय संस्कृति को समृद्ध बनाता है।

विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यह गृहपत्रिका राजभाषा हिंदी में प्रकाशित की जा रही है, जो न केवल राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बल देती है, बल्कि हिंदी के प्रति विभाग की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है।

मैं 'सीमा भारती 2025-26' के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय समूह, सभी रचनाकारों तथा इससे जुड़े समस्त सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी ऐसे ही प्रेरणा, सृजनशीलता एवं भाषा-प्रेम का प्रतीक बनी रहेगी।

सत्यदीप महापात्र

सत्यदीप महापात्र
आयुक्त, सीमाशुल्क (अपील)

सत्यमेव जयते

मोहन सिंह दोराई
(अपर आयुक्त)

प्रबंध संपादक की कलम से...✍

'सीमा भारती' के 30वें अंक के प्रकाशन के इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं सम्पूर्ण सीमाशुल्क, मुम्बई परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

तीन दशक का यह सतत प्रकाशन केवल एक पत्रिका की यात्रा नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक सृजनशीलता, एकता और संगठनात्मक संस्कृति का जीवंत प्रमाण है। 'सीमा भारती' ने न केवल विभागीय कार्यप्रणाली और गतिविधियों का दस्तावेज़ प्रस्तुत किया है, बल्कि साहित्य, कला, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं को भी स्वर प्रदान किया है। यह हमारे सहकर्मियों के विचारों, अनुभवों और कल्पनाशीलता को संजोने का माध्यम बनकर हम सबके बीच बौद्धिक और भावनात्मक सेतु का कार्य कर रही है।

पिछले 30 वर्षों में अनेक पीढ़ियाँ इस पत्रिका से जुड़ीं और उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। सम्पादकीय टीम का निरंतर परिश्रम, लेखकों का योगदान और पाठकों का स्नेह ही इस यात्रा को संभव बना सका है। इस अंक के माध्यम से हम केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि सीमाशुल्क परिवार की साझा विरासत और गौरव का उत्सव मना रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 30वाँ अंक भी अपने विविध एवं समृद्ध विषयवस्तु के कारण पाठकों को प्रेरणा देगा, नई सोच उत्पन्न करेगा और हमारे बीच सहयोग, संवाद और सौहार्द की भावना को और सुदृढ़ करेगा।

प्रभु से प्रार्थना है कि 'सीमा भारती' इसी प्रकार उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर रहे और आनेवाली पीढ़ियों को भी सृजनशीलता, उत्साह और प्रतिबद्धता का अमूल्य संदेश देती रहे।

सभी लेखकों, पाठकों और सहयोगियों को मेरी हार्दिक बधाई और मंगलकामनाएँ।

मोहन सिंह दोराई
प्रबंध संपादक

सत्यमेव जयते

जागृति जोशी
(सहायक निदेशक, राजभाषा)

संपादक की कलम से...

यह अत्यंत गर्व और हर्ष का विषय है कि मुंबई सीमाशुल्क अंचल-I की अपनी हिन्दी पत्रिका 'सीमा भारती' अपना 30वाँ अंक लेकर आपके समक्ष प्रस्तुत है। तीस अंकों का यह सफर केवल एक संख्या नहीं, बल्कि हमारे विभाग के समर्पण, प्रतिबद्धता और निरंतर प्रगति का प्रतीक है। यह ज्ञान के आदान-प्रदान, अनुभवों को साझा करने और हमारे अंचल की उपलब्धियों को रेखांकित करने में महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

'सीमा भारती' ने हमेशा मुंबई सीमाशुल्क अंचल-I के भीतर होने वाले नवाचारों, चुनौतियों और सफलताओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमने सीमाशुल्क प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, व्यापार सुगमता और राजस्व संग्रह के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में हमारे योगदान को दर्शाने वाले लेखों को प्राथमिकता दी है। इस यात्रा में, हमने विभाग के भीतर की प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान किया है, जहाँ वे अपने विचारों, कविताओं और अनुभवों को साझा कर सकें।

यह 30वाँ अंक भी इसी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाता है। इसमें आपको सीमाशुल्क के बदलते परिदृश्य, नई तकनीकों के प्रयोग, प्रवर्तन कार्रवाइयों की जानकारी और हमारे अधिकारियों के प्रेरक अनुभवों पर केंद्रित आलेख मिलेंगे। हमारा विश्वास है कि ये आलेख न केवल आपको अद्यतन जानकारी प्रदान करेंगे, बल्कि हमारे विभाग के कार्यक्षेत्र और महत्त्व को समझने में भी सहायक होंगे।

हम उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान, अनुभव और समय से 'सीमा भारती' को एक विश्वसनीय और पठनीय पत्रिका बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आपके सहयोग के बिना यह यात्रा संभव नहीं थी। साथ ही, हमारे पाठकों का अटूट विश्वास और प्रोत्साहन ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

इस अंक को साकार करने में, मुंबई सीमाशुल्क अंचल-1 के हिन्दी अनुभाग में पदस्थ सभी अधिकारियों का सहयोग अभूतपूर्व रहा है। उनके समर्पण और सक्रिय भागीदारी के बिना, इस पत्रिका का संपादन संभव नहीं था। उन्होंने न केवल उत्कृष्ट आलेखों के चयन और संपादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि प्रूफरीडिंग से लेकर अंतिम रूप देने तक हर चरण में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया। उनके सामूहिक प्रयासों और हिंदी भाषा के प्रति उनकी निष्ठा ने ही 'सीमा भारती' को यह विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है।

हम आशा करते हैं कि 'सीमा भारती' का यह 30वाँ अंक आपको पसंद आएगा और आप भविष्य में भी हमें अपना समर्थन देते रहेंगे। हम मुंबई सीमाशुल्क अंचल-1 को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सोपारा (मुंबई) : भारत का एक प्राचीन बंदरगाह

असलम हसन
आयुक्त सीमाशुल्क (निर्यात)

भारत का प्राचीन बंदरगाह सोपारा, भारत के अति व्यस्ततम मुंबई शहर का एक उपनगरीय इलाका है जिसे नाला-सोपारा के नाम से जानते हैं। यह महाराष्ट्र के पालघर जिले में स्थित है। क्या आप जानते हैं कि यही नाला-सोपारा इतिहास के किसी कालखंड में हमारे देश का एक महत्वपूर्ण और व्यस्ततम बंदरगाह के रूप में स्थापित था? आज का यह नालासोपारा भले ही मुंबई महानगर के निकट एक आम सा उपनगर हो; लेकिन इतिहास के पन्नों पर कभी सोपारा अर्थात सुर्परका एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है, जिसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह प्राचीन 'अपरांत' प्रांत की राजधानी थी। भारत के पश्चिमी तट पर स्थित सोपारा न केवल विदेश व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र था; बल्कि प्राचीन समय में यह बौद्ध धर्म का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा। यह मेसोपोटामिया, मिस्र, कोचिन, अरब और पूर्वी अफ्रीका के साथ व्यापार करने वाली सबसे बड़ी बस्ती थी।

इस शहर का जिक्र या वर्णन हिब्रू ग्रंथ में आफिर के नाम से मिलता है। सोपारा सातवाहन वंश के समय एक प्रमुख सांस्कृतिक इकाई भी था। सोपारा से नानाघाट, नासिक और महेश्वर होते हुए एक व्यापारिक मार्ग उज्जैन तक जाता था। सोपारा का एक गौरवशाली अतीत भी है। मिस्र, यूनान, रोमन और मध्य पूर्व एशिया के शहर के साथ इसके व्यापारिक संबंध इतने गहरे थे कि इसका उल्लेख प्राचीन पुस्तक 'पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी' में देखने को मिलता है। इस शहर का उल्लेख भारतीय मूल के लगभग सभी धर्म ग्रंथों में एक महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में भी किया गया है। प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्रंथ में इस शहर का उल्लेख 'परशुराम तीर्थ' के रूप में किया गया है; जबकि बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' में इसका उल्लेख उस स्थान के रूप में किया गया, जहां के बारे में विश्वास है कि भगवान बुद्ध वहां स्वयं ही पधारे थे।

जैन ग्रंथ 'विविधतीर्थकल्प' में इसका उल्लेख जैनियों के 84 सबसे पूजनीय तीर्थों में से एक के रूप में किया गया है। इस बंदरगाह ने बहुत से विदेशी यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित किया। कहा जाता है कि चीनी यात्री हेनसांग से लेकर अरब यात्री अल अदरिसी इस जगह यात्रा कर चुके हैं। ऐसी मान्यता है कि सुर्परका की स्थापना भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने की थी। महाभारत में उल्लेख है कि पश्चिमी तट के विभिन्न स्थानों का दौरा करते हुए अर्जुन पवित्र सुर्परका में आए थे। स्कंद पुराण में उल्लेख है कि सोपारा में यदि कोई व्रत और तप करता है तो इस स्थान की पवित्रता के कारण उसका न केवल पाप विमोचन होगा बल्कि उसका लाभ भी 7 करोड़ गुना बढ़ जाएगा।

बौद्ध ग्रंथ 'महावंश' में कहा गया है कि तीसरी बौद्ध परिषद के बाद, अशोक ने अपने एक धर्म प्रचारक यवन धम्मरक्षित को अपरान्त भेजा। कहा जाता है कि इस धर्म प्रचारक ने 70,000 श्रोताओं को बौद्ध धर्म का उपदेश

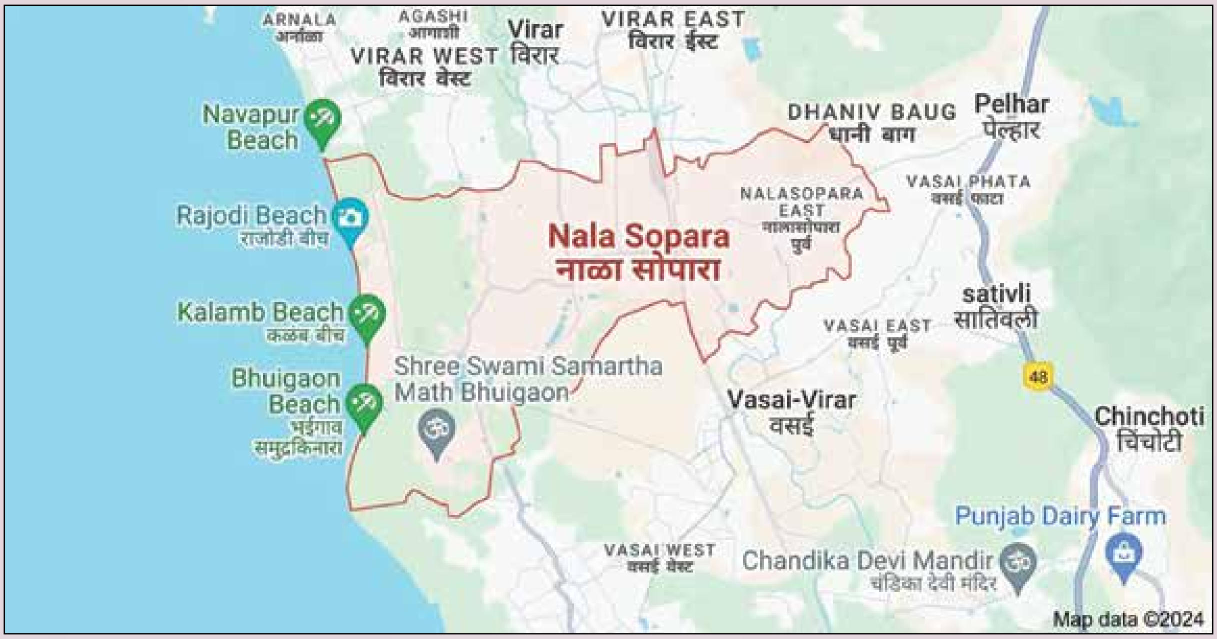

दिया, जिनमें से 1000 पुरुष और 1000 से अधिक महिलाएँ, जो सभी क्षत्रिय थीं, पुरोहिती में शामिल हुईं। यवन को आम तौर पर एक यूनानी या बैक्ट्रियन कहा जाता है; और इस धर्म प्रचारक के चयन से संकेत मिलता है कि सोपारा की आबादी में कुछ विदेशी तत्व होंगे।

सोपारा बौद्ध परंपरा में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पिछले जन्म में गौतम बुद्ध का जन्म बोधिसत्व सुप्परक के रूप में हुआ था। बुद्ध को सुप्परक नाम दिया जाना ही इस स्थान के महत्व को दर्शाता है। इसके अलावा, बोधिसत्व पुन्ना की कहानी में यह भी कहा गया है कि जब पुन्ना श्रावस्ती गए थे, तो उनके अनुरोध पर बुद्ध सुप्परक गए थे। बुद्ध यहां आए और उन्होंने ब्राह्मण ऋषि वक्कलि और 500 विधवाओं को बौद्ध धर्म में परिवर्तित किया, जिन्हें उन्होंने अपने नाखून और कुछ बाल अवशेष के रूप में दिए, जिसके ऊपर उन्होंने एक स्तूप का निर्माण किया, जिसे विधवा स्तूप कहा जाता है। सोपारा में पाए गए 8वें और 9वें अशोक के शिलालेख में भी इस शहर का महत्व इंगित होता है और अफ्रीकी भूगोलवेत्ता ने सोपारा को 'आर्य' के नाम से वर्णित किया है। विदेशी यात्रियों की यात्रा वृतांत में स्पष्ट है कि प्राचीन मुंबई का यह उपनगर नालासोपारा न केवल एक फलता-फूलता व्यापारिक बंदरगाह था बल्कि एक घनी आबादी वाला शहर भी था जहां विदेशी यात्री भी निवास करते थे।

8वीं शताब्दी की एक पुस्तक 'कुवलयमाला' में तक्षशिला के एक व्यापारी लोभदेव के इतिहास का उल्लेख है, जो अपने घोड़ों को बेचने के लिए दक्षिणापथ से सोपारा आया था। सोपारा में उसकी मुलाकात एक श्रेष्ठिन से होती है, जो उसे अपने घोड़े बेचने में मदद करता है; और उसे अमीर बनने में मदद करता है। जिस तरह से इस पुस्तक में घोड़ों और घोड़ों के व्यापार का इतने विस्तार से वर्णन किया गया है, उससे लेखकों को लगता है कि सोपारा में जैन समुदाय या जिस व्यक्ति ने इस पुस्तक को बनवाया था, वह शायद घोड़ों के व्यापार में शामिल था। इस विचार का समर्थन करने वाला एक और संकेत यह है कि घोड़बंदर, जिसे विद्वानों के अनुसार घोड़ों के व्यापार में शामिल एक बंदरगाह माना जाता है, सोपारा से बहुत दूर नहीं है। कहा जाता है कि इस शहर अर्थात् सोपारा व्यापारियों के अपने क्लब और रीति रिवाज थे और विदेशी व्यापारियों के अपने रोमांस साझा करने होते थे। इससे संकेत मिलता है कि विदेशी लोग यहां आते रहते थे।

नालासोपारा वर्तमान मुंबई का एक उपनगर है। हालाँकि, सोपारा या सुर्परका, जैसा कि इसे अतीत में जाना जाता था, ने न केवल भारत के पश्चिमी तट पर एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में बल्कि एक प्रमुख व्यापार केंद्र के रूप में भी शानदार प्रदर्शन किया था। मिस्र, यूनान, रोमन और मध्य पूर्व के साथ इसके व्यापारिक संबंध इतने

अधिक थे कि इसका उल्लेख 2000 साल पुरानी किताब 'पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी' में भी मिलता है। इसे 'अपरांत' की राजधानी भी माना जाता है और अशोकन एडिक्ट के रूप में यह मुंबई का सबसे पुराना ऐतिहासिक वसीयतनामा भी है।

यात्रा हमेशा से ही मानव जाति के लिए कौतुहल का विषय रहा है और मनुष्य हमेशा से ही अपने मन में उठने वाली जिज्ञासाओं का उत्तर पाने की खोज में लगा रहता है। यात्रा धार्मिक उत्थान के लिए हो सकती है या आनंद की तलाश के लिए या शौक के तौर पर या फिर सांसारिक जीवन से ऊब मिटाने के लिए। यात्रा को पेशे के तौर पर इस्तेमाल करने पर आर्थिक लाभ भी हो सकता है और यात्रा अध्ययन और शोध के उद्देश्य से भी की जा सकती है। यात्रा एक विशेषाधिकार है जिसका आज हममें से अधिकांश लोग आनंद लेते हैं; क्योंकि हमारे पास जीविका के साधन पहले से ही मौजूद हैं और हमारी भूख को शांत करने के लिए समय और धन दोनों ही प्रचुर मात्रा में हैं; हालांकि, अतीत में ऐसा नहीं होता था, क्योंकि अधिकांश लोगों के लिए रोजमर्रा के संघर्ष बहुत वास्तविक थे और किसी भी रूप में यात्रा करना एक विलासिता और दुर्लभता होती थी।

ब्राह्मणवादी लेखन में सुर्परका को एक पवित्र स्थान बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि सुर्परका की स्थापना भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने की थी और इसलिए यह एक पवित्र तीर्थ है। परशुराम लोगों को शिक्षा देने के लिए यहाँ विभिन्न संस्कृत वेद भी लाए और अपने परशु (कुल्हाड़ी) से इस स्थान की रक्षा भी की। पूर्व में सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला, पश्चिम में अरब सागर, उत्तर में वैतरणा नदी और दक्षिण में उल्हास नदी के साथ, परशुराम ने सुर्परका को इस तरह से बनाया कि पवित्र स्थान के लोग निर्वाह के साथ रहते हैं। सोपारा को ऐसी भूमि माना जाता है, जिसमें 108 तीर्थ और कई कुंड थे। पद्मपुराण में 108 तीर्थों के नाम बताए गए हैं और यह भी बताया गया है कि यह सबसे पवित्र स्थानों में से एक है। इनमें से किसी एक कुंड या वैतरणी नदी में डुबकी लगाने से आपके सारे पाप धुल सकते हैं। स्कंदपुराण में उल्लेख है कि सोपारा क्षेत्र अत्यंत पवित्र है। त्र्यंबकेश्वरमहात्म्य में निर्मल को सबसे पवित्र तीर्थ बताया गया है, जो स्वर्ग प्राप्ति में मदद करता है। हरिवंश में उल्लेख है कि यह बहुत पवित्र स्थान है और इसके आयाम भी बताए गए हैं।

सोपारा को जैन धर्म के अनुयायी, पवित्र शत्रुंजय पर्वत की प्राचीन तलहटी मानते हैं। शत्रुंजय जैनियों के लिए वैसा ही है जैसा मुसलमानों के लिए मक्का। जैनियों का मानना है कि सोपारा शत्रुंजय की सबसे पुरानी तलहटी थी, जिसे प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के सबसे बड़े पुत्र भरत चक्रवर्ती ने स्थापित किया था, जो धीरे-धीरे गुजरात के वल्भीपुरा और फिर पालीताना में क्रमशः स्थानांतरित हो गई, जहाँ आज भी इसकी पूजा की जाती है। ऐसे बहुत से संदर्भ हैं, जो सोपारा को यह विशेष दर्जा देते हैं। अशोक के पोते संप्रति जैन धर्म के एक उत्साही अनुयायी थे, उन्होंने सोपारा क्षेत्र में साधुओं को संरक्षण दिया था और उनके लिए सुरक्षित यात्रा की सुविधा प्रदान की थी। जैन धर्म में विभिन्न संप्रदाय होते हैं, जिनके अपने नियम और कार्य-प्रणाली होती है। प्राचीन काल में, 84 संप्रदाय थे, जिनके बीज लगभग पहली शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी ईस्वी के बीच सोपारा में बोए गए थे। जैन ग्रंथों के अनुसार निम्नलिखित वर्गीकरण से पता चलता है कि यह कैसे अस्तित्व में आया-

पार्श्वनाथ परम्परा के 17वें प्रमुख आचार्य यक्षदेवसूरी ने 58 ई. में 12 साल के अकाल के अंत के दौरान यहां का दौरा किया था। यहां उन्होंने आगम वचन आयोजित करके आगमों को पुनर्स्थापित करने और बचाने का प्रयास किया। आगम वचन साधुओं का एक समूह है जहां वे आगमों को याद करते हैं, क्योंकि इन आगमों को लिखने का कोई उचित तरीका नहीं था। इस समागम में 1000 से ज्यादा साधु और साध्वियाँ शामिल थीं। आचार्य जिनप्रभासूरी ने उल्लेख किया है कि सोपारा में आदिनाथ की एक प्रतिमा थी जिसकी लोग पूजा करते थे।

जैनियों का मानना था कि यह आदिनाथ की जीवितस्वामी की छवि थी। पेथड शाह, एक धनी व्यापारी ने पूरे भारत में 84 मंदिरों का निर्माण कराया; जिनमें से 51वां मंदिर उन्होंने सोपारा में पार्श्वनाथ मंदिर के रूप में बनवाया था। इनके अलावा जैन ग्रंथ, सोपारा में विभिन्न प्रतिष्ठा, दीक्षा, संघ-यात्रा और चातुर्मास की ओर भी

इशारा करते हैं, जो दर्शाता है कि यह उनके लिए एक पवित्र स्थान था। पश्चिमी भारतीय गुफा शिलालेखों में सोपारा के कई संदर्भ हैं। कार्ले से पहली शताब्दी ई.पू. के एक शिलालेख में सोपारा से सतिमिता द्वारा किए गए दान के साथ-साथ कुछ अवशेषों का उल्लेख है, जिन्हें भदंत धम्मुतरिया से संबंधित माना जा सकता है। सतिमिता धम्मुतरिया का भतीजा है और भदंत का नाम धर्मोत्तरीय संप्रदाय से उसके संबंध को दर्शाता है।

सोपारा एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था; और यह कल्याण और भरूच के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। 6वीं शताब्दी ई. में, यूनानी व्यापारी और भिक्षु कोसमास इंडिकोप्लुस्टेस ने कल्याण के पास सिबोर का उल्लेख किया है। 10वीं शताब्दी के दौरान, अरब यात्री अल मसूदी ने थाना के साथ सुबारा का उल्लेख किया है। फ़ारसी यात्री इब्न हौकल और अल इस्तख़्र और अरब भूगोलवेत्ता अल बिरूनी ने क्रमशः सुरबराह, सुरबाया और सुबारा का उल्लेख किया है। 12वीं शताब्दी में, अफ्रीकी भूगोलवेत्ता अल इदरीसी ने सुबारा को भारत के महान व्यापार केंद्रों में से एक बताया।

जैन ग्रंथों में, विभिन्न संघ-यात्राओं का उल्लेख मिलता है, जो विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारियों और श्रेष्ठियों ने दूसरी शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक सोपारा में की थीं। यात्रा केवल भीतर की ही नहीं बल्कि बाहर की भी हो सकती है। सोपारा के लोग बाहर भी गए हैं और उन्होंने अपने चिह्न भी छोड़े हैं। 12वीं शताब्दी के मध्य में, सोपारा को, कोंकण प्रतिनिधि तेजकंठ को कश्मीर में आयोजित एक साहित्यिक सम्मेलन में भेजने का सम्मान मिला था। उन्हें भेजने वाले कोंकण राजा का नाम अपरादित्य था। गुजरात के सोजित्रा कस्बे में एक कास्य प्रतिमा मिली है, जिसका समय 1514 ई. बताया गया है। प्रतिमा को बनवाने और स्थापित करने वाला व्यक्ति सहुआला का था, जो अतीत में सोपारा को संदर्भित करने वाले नामों में से एक है।

श्री सोपारा विग्नाप्टिका एक काव्यात्मक संस्मरण है, जिसमें एक साधक की पवित्र भूमि सोपारा की यात्रा का वर्णन किया गया है। यह लगभग 13वीं-15वीं शताब्दी की हस्तलिखित पांडुलिपि से लिया गया है; और इसे प्रारंभिक गुजराती अपभ्रंश में लिखा गया है तथा लेखक का नाम नहीं बताया गया है। लेखक ने बताया कि वह सोपारा की यात्रा कर रहे हैं, जो एक तीर्थ क्षेत्र है जिसमें प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की जीवित स्वामी मूर्ति है; और यह एक सर्वश्रेष्ट तीर्थ है जो इस एक तीर्थ की यात्रा को मिलाकर 68 तीर्थों की यात्रा के बराबर बनाता है। उन्होंने इसे शत्रुंजय तलेटी के नाम से भी संदर्भित किया है। उन्होंने इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और जैव विविधता का विशद वर्णन किया है। उन्होंने इस स्थान का वर्णन समुद्र तट के करीब किया है; और यह 1300 सरोवरों की भूमि है।

यहाँ नारियल, केला, अंगूर, ताड़, बिजौरा, चावल, केतकी, मोगरा, चंपा, अगर, पगार, सुगंधित फल, इलायची, लवंग, चंदन जैसे फल, फूल और अन्य खेती होती है। उन्होंने पेड़ों की भव्यता और घने वनस्पति के फैलाव का उल्लेख किया है। फिर वे बताते हैं कि कैसे लोग रास-भास, गायन, नृत्य के साथ पूजा करते हैं; और कैसे भक्ति सभी चिंताओं को समाप्त कर देती है; और वह केवल भगवान के साथ एक होना चाहता है। सबसे सुंदर हिस्सा यह है कि वह प्राकृतिक सुंदरता और देवता को समान स्नेह और सम्मान के साथ संबोधित करते हैं। वर्णित

बुद्ध स्तूप के चारों ओर लेटे हुए कीचक / भरवाहक

7 कांस्य सिक्के मिले हैं। अब ये आगाशी जैन मंदिर ट्रस्ट के पास हैं।

यात्रा, यात्री के लिए भौतिक और पारलौकिक दोनों है।

सोपारा और उसके आस-पास कई पुरातात्विक खुदाई और अन्वेषण किए गए हैं, जिनसे डेटा का खजाना मिला है। सोपारा के बुद्ध स्तूप स्थल, जिसे स्थानीय रूप से बुरुदा राजचा कोट के नाम से जाना जाता है, की खुदाई 1882 में भगवानलाल इंद्रजी ने की थी; और ईंटों से बने एक कक्ष के भीतर एक बड़ा पत्थर का संदूक मिला था जिसमें मैत्रेय बुद्ध सहित बुद्ध की 8 धातु की प्रतिमाएँ, पत्थरों से बना एक तांबे का डिब्बा, सोने के फूल और सुगंधित पाउडर, आभूषण, भिक्षापात्र जैसे अवशेष और गौतमीपुत्र सतकर्णी का एक चांदी का सिक्का था। हालाँकि स्तूप तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है; लेकिन धातु की मूर्तियाँ 8वीं-9वीं शताब्दी ई. के आसपास की लगती हैं- संभवतः राष्ट्रकूटों के शासनकाल के दौरान स्तूप का विस्तार किए जाने के समय की लगती हैं। इसके अलावा, अशोक के 8वें शिलालेख का एक टुकड़ा पास के भटेला तालाब से मिला था। यह शिलालेख शायद न केवल सोपारा का बल्कि मुंबई का भी सबसे पुराना ऐतिहासिक साक्ष्य है।

1939-40 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एम.एम. कुरैशी द्वारा इस स्थल की पुनः खुदाई की गई। मुख्य स्तूप के दक्षिण की ओर कई पत्थर के लिंटेल और दो छोटे स्तूप पाए गए, साथ ही मुस्लिम काल के सादे चमकदार बर्तनों के कुछ टुकड़े भी मिले। 1956 में, अशोक के 9वें शिलालेख के टुकड़े भुईगांव के एक छोटे लड़के को मिले। अनवर मुंशी (1972) को सोपारा में सातवाहन सीसे के कई सिक्के मिले।

आस-पास के क्षेत्र में अन्वेषण से आरपीडब्लू और ग्लेज्ड वेयर मिले हैं। 1993 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और ब्रिटिश अकादमी, हैदराबाद द्वारा किए गए संयुक्त उत्खनन से साक्ष्य की पुष्टि होती है, जहाँ प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की प्राचीन वस्तुएँ - सीसा और तांबे के सिक्के, अर्ध-कीमती पत्थर के मोती, उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन (एनबीपीडब्लू) के छोटे टुकड़े, रोमन एम्फ़ोरा के टुकड़े और इस्लामी नीले रंग के ग्लेज्ड वेयर पाए गए। इस उत्खनन के दौरान एक मिट्टी की दीवार और पत्थर के अलग-अलग आकार के ब्लॉक वाली चौदह मोटे पत्थर की दीवार भी मिली। गास के पूर्व में एक पुर्तगाली लैंडिंग स्थल भी पाया गया है।

कृपया स्तूप के आस-पास पड़े कीचक/भरवाहकों पर ध्यान दें। जाहिर है कि इन्हें बाद में कहीं और पाए जाने के बाद साइट पर लाया गया था, लेकिन वे पास में एक मंदिर संरचना की उपस्थिति का संकेत देते हैं। कम से कम 4 कीचक हैं। इसके अलावा, 10 से अधिक मन्नत स्तूप हैं, जिनमें से कुछ एम. एस चौहान द्वारा हाल ही में की गई खुदाई के दौरान खोजे गए थे। ये मन्नत स्तूप इस बात के संकेत हैं कि लोग अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए यहाँ आते होंगे।

बुद्ध स्तूप के चारों ओर लेटे हुए कीचक / भरवाहक

चक्रेश्वर तालाब के पास बहुत सी मूर्तियां मिली हैं; और उन्हें पास के श्री राम मंदिर में रखा गया है। मंदिर 100 साल से ज्यादा पुराना नहीं लगता है; लेकिन आस-पास पाए गए सभी अवशेष मंदिर परिसर में रखे गए हैं। सूचीबद्ध सभी मध्ययुगीन मूर्तियों में से, ध्यान देने योग्य हैं ब्रह्मा, जिनकी दाढ़ी पूरी तरह से बढ़ी हुई है और 3 सिर हैं और अग्नि की दुर्लभ छवि, जिसे उनके वाहन राम की सवारी करते हुए दिखाया गया है। अन्य आकृतियाँ हैं महिषासुरमर्दिनी, सूर्य, गणेश, उमा-महेश्वर, हरिहर, गजलक्ष्मी, जैन अंबिका, एक नंदी, कई स्मारक पत्थर और सुर सुंदरियाँ।

गास गांव के आसपास का क्षेत्र पुरातात्विक अवशेषों

से समृद्ध है। भगवानलाल इंद्रजी भी राम कुंड के पास के क्षेत्र को पुराने जैन मंदिर के अवशेषों वाला स्थान बताते हैं। गास के टाकी पाड़ा क्षेत्र में पानी की टंकी से बहुत सारे अवशेष मिले हैं जिनमें जैन मंदिर के लिंटल और अन्य टुकड़े, विष्णु, हीरो पत्थर और अन्य मलबे शामिल हैं जो आसपास के क्षेत्र में मंदिर/मंदिरों की उपस्थिति का संकेत देते हैं। उल्लेखनीय खोज में इस क्षेत्र में पाया गया एक पत्थर का लंगर शामिल है जो उस स्थान से मेल खाता है जहाँ पहले बंदरगाह हुआ करता था; जो अब गाद के कारण भर गया है। उसी क्षेत्र में एक मंदिर की चबूतरा भी मिला है, जहाँ आज एक झुग्गी बस्ती है। इनमें से कुछ अवशेष मुंबई विश्वविद्यालय के पास हैं जबकि कुछ क्षेत्र के मंदिरों के संरक्षण में हैं।

हाल ही में प्राप्त खोजों में गास से प्राप्त सूर्य प्रतिमा और जैन तीर्थंकरों की 7 कांस्य प्रतिमाएं शामिल हैं। सभी प्रतिमाओं पर शिलालेख हैं। सूर्य प्रतिमा 1412 ई. की है जबकि कांस्य प्रतिमाएं 1458 ई. से 1555 ई. तक की हैं। इस शोधपत्र के लेखकों ने हाल ही में जैन निष्कर्षों पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया है, जिसमें स्थापित किया गया है कि 14वीं - 16वीं शताब्दी के दौरान सोपारा जैनियों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण तीर्थ क्षेत्र था। ध्यान देने योग्य एक महत्वपूर्ण बात यह है कि मोधा, जो ब्राह्मण व्यापारी थे और 10वीं -11वीं शताब्दी ई. के आसपास संजन में राष्ट्रकूटों के अधीन प्रमुखता से उभरे, का उल्लेख इन प्रतिमाओं पर शिलालेखों में किया गया है।

ये चित्र मुख्य रूप से जैन मूल के हैं; इसलिए यह संकेत देता है कि मोधा सोपारा चले गए और एक व्यापारिक समुदाय के रूप में अपनी जड़ों की ओर लौट गए, जैसा कि मन्नत चित्रों पर उल्लिखित अन्य समुदायों के बीच स्पष्ट है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि उनके विश्वास में कुछ परिवर्तन हुआ था या उस समय क्षेत्र में रहने वाले अन्य जैन व्यापारियों के साथ कुछ समामेलन हुआ था। इनके अलावा, नई खोजों में दशावतार पैनल के साथ विष्णु की छवि शामिल है जो शिलाहार-यादव काल से संबंधित है; और गणेश पैनल, जो ज्यादातर मध्यकालीन है। यह पैनल और छवि दोनों नाला गांव के शंकर नागेश्वर मंदिर में हैं।

व्यापार से संबंधित एक अजीबोगरीब उल्लेख यह है कि सोपारा में कलाल (शराब बनाने और बेचने वाले लोग) मौजूद थे। हालाँकि, इन लोगों को नीची नज़र से नहीं देखा जाता था या समाज से बाहर नहीं किया जाता था और वास्तव में, उन्हें सहभोज का अधिकार था। सबसे दिलचस्प बात यह है कि इसका उल्लेख एक जैन साधु ने किया है। यह सोपारा के प्राचीन महानगरीय होने का प्रतीक है। सोपारा 2-3 शताब्दी ईसा पूर्व से ही एक संपन्न बंदरगाह रहा है, यदि उससे पहले नहीं। 'पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी' में उल्लेख है कि मानसून किस तरह मौसमों का निर्णायक होता था और भारत के साथ-साथ दुनिया से आने वाले जहाजों के आने, बंदरगाह और बाहर निकलने में मदद करता था। एडवन में गुफाओं की खोज फिर से एक संकेत है कि यह सोपारा के इतिहास में एक बंदरगाह के रूप में महत्वपूर्ण रहा होगा क्योंकि यह सोपारा का उत्तरी मार्कर है और वैतरणा में प्रवेश बिंदु भी है।

इस शोधपत्र के लेखकों में से एक को 2018 में एक प्राचीन पत्थर का लंगर मिला था। लंगर फिर से गास-ताकी पाडा के निकट स्थित है। इस क्षेत्र में ऊपर दर्शाए गए बहुत से पुरातात्विक निष्कर्ष पाए गए हैं। लंगर उस

गजलक्ष्मी, सूर्य, महिषासुरमर्दिनी

स्थान का संकेत है जहाँ संभवतः जहाज़ों को रखा जाता था। दिलचस्प बात यह है कि पत्थर के लंगर स्थल के पास एक बंदर मस्जिद है। बंदर का मतलब बंदरगाह होता है, क्या इस नाम का इसके अतीत से कोई संबंध है?

17वीं सदी के एक कच्छी समुद्री मैनुअल में बोलिंज-सोपारा खाड़ी के माध्यम से एक नियमित माल व्यापार मार्ग की बात कही गई है। 17वीं सदी तक आगाशी एक जहाज निर्माण केंद्र था, जहाँ मराठों के साथ-साथ पुर्तगालियों ने 500 टन तक के जहाज बनाए थे। सोपारा एक संपन्न बंदरगाह हुआ करता था; लेकिन बाद में नहरों में गाद जमने के कारण इसकी हालत खराब होने लगी। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि दूसरी-तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास समुद्र का स्तर वर्तमान स्तर से लगभग 0.5 मीटर ऊपर रहा होगा। 2000 वर्षों की अवधि में धीरे-धीरे गाद जमने की प्रक्रिया शुरू हुई और औपनिवेशिक काल के दौरान गाद जमने की प्रक्रिया में तेज़ी आई, क्योंकि अंदरूनी इलाकों में भारी वनों की कटाई हुई और 19वीं सदी के दूसरे हिस्से में ऊंचे तटबंध पर रेल ट्रैक के निर्माण के कारण चैनल टूट गया, जिससे बीच का हिस्सा सूखा रह गया। इसके अलावा, क्षेत्र में तेजी से शहरीकरण के कारण बची हुई चैनलें भर गई हैं।

सोपारा 1000 ईसा पूर्व से लेकर 15वीं शताब्दी तक भारत के पश्चिमी तट का एक समृद्ध बंदरगाह था; और इसके प्राचीन नाम सुर्परका, सुपारक और सुपारा हैं। यह बंदरगाह, दक्खन के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। प्राचीन काल में सोपारा भारत के पश्चिमी तट का सबसे बड़ा नगर था। सोपारा बंदरगाह के माध्यम से प्राचीन भारत ने अरब, रोम, मेसोपोटामिया, पूर्वी अफ्रीका, ग्रीस, मिस्र, कोचिन, मालाबार, दक्षिण पश्चिम एशिया और यहां तक कि पार्थियन आदि की प्राचीन संस्कृतियों के साथ व्यापारिक संबंध बनाए रखें। उन दिनों में व्यापार विशाल अरब सागर पर होता था। प्राचीन व्यापारिक सड़कों ने कल्याण के माध्यम से सोपारा को डेक्कन में नासिक, पैठण और तेर के साथ जोड़ा। इन देशों से आने वाले व्यापारियों ने भी बौद्ध धर्म के प्रसार में मदद की।

तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 9वीं शताब्दी ईसवी तक के बीच पश्चिमी दक्कन के लिए सोपारा व्यापार और आध्यात्मिकता दोनों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बना रहा। चौल से जुन्नार और नानेघाट आदि प्राचीन मार्ग से व्यापारी उत्पादों और सामग्रियों को बेचने और खरीदने के लिए अपने साथ ले जाते थे। उदाहरण के लिए, रोमन अपने साथ शराब लाते थे जबकि भारतीय, मसाले, रेशम और कपास बेचते थे। वास्तव में भारतीय जीवित पशुओं और पक्षियों- जैसे मोर, बंदर और हाथी का भी निर्यात करते थे। व्यापारी नानेघाट दर्रे से कोंकण और दक्कन जाते थे; यहां वे व्यापार के सिलसिले में और भी कई जगहों पर जाते थे। सोपारा व्यापार के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण बंदरगाह बन गया था। यहां के अधिकांश व्यापारी बौद्ध थे; इसलिए समय के साथ सोपारा स्तूप का महत्व बढ़ता गया।

आरंभिक शहरीकरण की प्रक्रिया में भारतीय व्यापारियों और विदेशी व्यापारियों, यानी अरब और भूमध्यसागरीय व्यापारियों, दोनों द्वारा किए गए समुद्री व्यापार का महत्व रहा है। ग्रीक और मिस्र के भूगोलवेत्ताओं और यात्रियों द्वारा क्लाडिअस टालमी और एरिथ्रियन सागर के 'पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी' द्वारा नोट की गई जानकारियां अत्यधिक मूल्यवान साबित हुई हैं; क्योंकि उनमें निर्यात की वस्तुओं का विवरण है; और आयात के साथ-साथ उन बंदरगाहों का भी, जहां से उन्हें भेजा गया या एकत्र किया गया था, विवरण है। यह भी सुझाव दिया गया है कि टायर के राजा हीराम ने इस शहर से सुलैमान के लिए सोना, कीमती पत्थर और अल्मुग के पेड़ लाए थे जिसे ओपीर की भूमि कहा जाता था।

नहपान पश्चिमी क्षत्रपों का एक महत्वपूर्ण शासक था, जो उत्तर-पश्चिमी भारत में इंडो-सीथियनों का वंशज था। उसका एक दामाद था जिसका नाम उषावदत्त था, जिसके शिलालेख नासिक के पास पांडु-लेना गुफाओं में उत्कीर्ण हैं । उषावदत्त दिनिका का पुत्र था और उसने नहपान की पुत्री दक्षमित्रा से विवाह किया था। शिलालेखों के अनुसार, उषावदत ने अपने ससुर की ओर से कई दान और विजय अभियान पूरे किए। उन्होंने भरुकच्छ, दशपुरा, गोवर्धन और शोरपरागा में विश्राम गृह, उद्यान और तालाब बनवाए। उन्होंने मलय द्वारा हमला किए गए उत्तमभद्रों को बचाने के लिए नहपान के आदेश के तहत उत्तर में अभियान भी चलाया। उन्होंने नासिक के पास

त्रिरश्मी पहाड़ी में एक गुफा खोदी और इसे बौद्ध भिक्षुओं को भेंट किया।

डॉ. नवल वियोगी बताते हैं कि सोपारा से स्तूप की खोज, पश्चिमी महाराष्ट्र से कई गुफाएँ और शिलालेख; उस्मानाबाद जिले के थेर की हाल की खोज और बड़ागाँव स्तूप, पित्तलखोरा और वेरुल के अवशेष; इसी तरह विदर्भ के भंडारा जिले से पौनी स्तूप और उसके भंडार के अवशेष और नागरा के स्तूप के अवशेष आदि, अमीर और गरीब दोनों पर समान रूप से बौद्ध धर्म के प्रभाव को साबित करते हैं। डॉ. नवल वियोगी लिखते हैं कि अशोक के टूटे हुए शिलालेख थाना जिले के सोपारा और चंद्रपुर जिले के देवटेक से मिले हैं। इसी तरह नागपुर क्षेत्रों में कोल्हापुर, सोपारा, कन्हेरी और पौनी से महा-स्तूप के अवशेष मिले हैं। उपरोक्त स्रोतों से हमें अशोक के काल में महाराष्ट्र में बौद्ध धर्म के प्रसार के बारे में जानकारी मिलती है। डॉ नवल वियोगी आगे लिखते हैं कि इसी प्रकार हमें थेर-गाथाओं से पुन्ना और अर्हत इशिदिन्ना के बारे में कुछ जानकारी मिलती है। अर्हत पुन्ना ठाणे जिले के सोपारा के एक व्यापारी थे। सोपारा का नाम हम पाली साहित्य में पढ़ते हैं। तथागत से दीक्षा लेने और धम्म का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के बाद पुन्ना वापस सोपारा आए और एक विहार का निर्माण करने के बाद बौद्ध धर्म के धार्मिक प्रचार में पूरी तरह से व्यस्त हो गए ।

अप्रैल 1882 में, भगवानलाल इंद्रजी, एक प्रसिद्ध पुरातत्वविद्, मुद्राशास्त्री और पुरालेखशास्त्री ने सोपारा के पास मरदेस गांव में बुरुद राजचे कोट टीले पर खुदाई की। एक बौद्ध स्तूप के खंडहर पाया गया। स्तूप के केंद्र से एक बड़े पत्थर के संदूक की खुदाई की गई जिसमें मैत्रेय बुद्ध की आठ कांस्य प्रतिमाएँ थीं जो लगभग 8वीं-9वीं शताब्दी ई. की हैं। इस संदूक में तांबे, चांदी, पत्थर, क्रिस्टल और साथ ही कई सोने के फूल और एक भिक्षापात्र के टुकड़े भी थे। गौतमीपुत्र सातकर्णी का एक चांदी का सिक्का भी टीले से मिला था।

बॉम्बे प्रांतीय सरकार ने सोपारा अवशेषों को बॉम्बे की एशियाटिक सोसाइटी को भेंट किया। इस प्राचीन शहर के स्थल पर खुदाई के दौरान मिले सिक्के और कलाकृतियाँ आज भी एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। रामकुंड के पास एक पुराने मुस्लिम कब्रिस्तान में, 7वें और 9वें प्रमुख शिलालेखों के टुकड़े पाए गए। इन शिलालेखों को छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुंबई में देखा जा सकता है।

सोपारा में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तूप भी है। यह स्तूप भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है। 'नाळा' और 'सोपारा' दो अलग अलग गाँव थे। रेलवे लाइन के पश्चीम की ओर उत्तर दिशा की ओर 'नाळा' है तो पश्चिम में दक्षिण दिशा के तरफ 'सोपारा' गाँव है। वर्तमान में यह एक बड़ा शहर हो गया है। पुराने सोपारा गाँव के चारों तरफ हरियाली और बहुत सारे पेड़ हैं। सोपारा स्तूप में बुद्ध और साथ में एक अन्य बौद्ध भिक्षु की मूर्ति भी थी। यहाँ से निकली मूर्तियाँ, शिलालेख आदि छत्रपती संभाजीनगर के संग्रहालय में प्रर्दशित हैं। क्षेत्र में वर्षों पूर्व किये गए उत्खनन से पता चलता है कि सोपारा में बौद्ध, जैन और हिन्दू धर्म स्थलों की बहुलता थी जो प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से अब लुप्त हो चली है।

प्रियदर्शी अशोक के चतुर्दश शिलालेख, सोपारा, शहबाजगढ़ी, मनसेहरा, गिरनार, कलसी, धौली, जौगढ़ तथा इलगुर्डा से उपलब्ध हुए हैं। ये लेख पर्वत की शिलाओं पर उत्कीर्ण पाए गए हैं। शहबाजगढ़ी तथा मनसेहरा के अभिलेखों के अतिरिक्त, सोपारा का अभिलेख भारतीय ब्राह्मी लिपि में हैं। इसी ब्राह्मी से वर्तमान देवनागरी लिपि का विकास हुआ है। यह बाईं ओर से दाहिनी ओर की लिखी जाती थी। शहबाजगढ़ी तथा मनसेहरा के अभिलेख ब्राह्मी में न होकर खरोष्ठी में हैं।

सोपारा का अभिलेख अशोक के साम्राज्य के सीमानिर्धारण में भी अत्यंत सहायक हैं। सोपारा तथा गिरनार के शिलालेखों से यह सिद्ध है कि पश्चिम में अशोक के साम्राज्य की सीमा पश्चिमी समुद्र थी। अशोक ने इस तथ्य को भली भाँति समझ रखा था कि भाष्यकार मूल उपदेश को निस्सार कर देते हैं। अतएव उसने अपनी प्रजा तक पहुँचने का प्रयास किया। सम्राट् के अपने शब्दों में ये लेख सरल एवं स्वाभाविक शैली में जनभाषा पालि के माध्यम से उसके उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाते हैं। यही इन अभिलेखों का वैशिष्ट्य तथा यही इनकी सफलता है।

दिव्यावदान पुस्तक के अनुसार विश्व प्रसिद्ध सोपारा

ताकी पाड़ा से कुछ किचक, मंदिर का चबूतरा - ताकी पाड़ा

स्तूप 2,500 साल पहले पुन्ना नामक एक व्यापारी द्वारा बनाया गया था। सोपारा स्तूप का निर्माण पुन्ना ने गौतम बुद्ध भगवान की श्रद्धा में किया था। उन दिनों सोपरा के पुन्ना रूप में विख्यात व्यापारी ने अपने व्यापार संबंधी दौरे के वक्त श्रावस्ती का दौरा किया। वह पहली बार श्रावस्ती में गौतम बुद्ध से मिले। भगवान बुद्ध से कुछ प्रवचन सुनने के बाद उन्होंने सांसारिक मामलों को त्यागने का मन बना लिया और भगवान बुद्ध से भिक्षुक बनने की दीक्षा लेने लगे। वह बुद्ध की इच्छाओं से अत्यधिक प्रभावित थे। जब गौतम बुद्ध की अनुमति से वह सोपारा में अपने घर वापस आए तो उन्होंने चंदन की लकड़ी और ईंटों से एक सुंदर विहार का निर्माण किया।

पुन्ना प्रतिभावान और परिश्रमी थे। इससे उन्हें काफी संपत्ति बनाने में मदद मिली। उन्होंने समुद्री यात्राएं भी की और अपने व्यापार से जो पैसा कमाया उसे बाद में उन्होंने भगवान बुद्ध को अर्पित कर दिया। बुद्ध भगवान के निर्देशानुसार, पुन्ना सोपारा में बौद्ध धर्म को फैलाता है और कई लोगों को बौद्ध धर्म में परिवर्तित करता है। पुन्ना की कहानी का उल्लेख महाराष्ट्र में अजंता की गुफा संख्या 2 में भी मिलता है। इसे दरवाजे के ऊपर देखा जा सकता है। यानी पुन्ना की कहानी कम से कम 1500 साल पुरानी है।

हम सभी उस ऐतिहासिक घटना के बारे में जानते हैं जब महान अशोक के बेटे और बेटी– महेंद्र और संघमित्रा ने उत्तर भारत के बिहार के बोधगया से श्रीलंका के द्विपीय देश का दौरा किया था। वह बोधगया के पवित्र बोधि वृक्ष को साथ ले गए थे; लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस यात्रा के दौरान महेंद्र और संघमित्रा ने सोपारा स्तूप पर भी पड़ाव डाला था? बहुत से लोग इस अल्पज्ञात तथ्य के बारे में नहीं जानते हैं। यह भी बहुत संभव है कि संघमित्रा और महेंद्र ने नाला-सोपारा से ही श्रीलंका की अपनी यात्रा शुरू की थी।

आज का नाला सोपारा मुंबई महानगर के निकट भले ही एक अनजान सा उपनगर हो; लेकिन इतिहास साक्षी है कि भारत के प्राचीन इतिहास में यहीं से आयात और निर्यात का वो अध्याय खुला जिसने भारत की आर्थिक और व्यापारिक गतिविधियों में अपनी महती भूमिका निभाई। एक सम्पन्न व्यापारिक शहर सोपारा ने धार्मिक, सांस्कृतिक सामाजिक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता।

वस्तुतः सोपारा को अगर मुंबई शहर की जननी कहा जाए तो गलत नहीं होगा। इस ऐतिहासिक बंदरगाह से भारतीय सीमाशुल्क का भी निश्चित रूप से एक नाता रहा होगा। मौर्यकाल में राजस्व और सीमाशुल्क की अवधारणा से राज्य को पर्याप्त कर संग्रह हो जाता था। भारत के पश्चिमी तट पर स्थित आज का गुमनाम शहर 'नाला सोपारा' अपने सीने में अनेक घटनाओं या यादों को समेट कर शायद यही कहना चाह रहा हो कि देखो काल प्रवाह अपनी निरंतरता में आज भी कायम है। मुंबई बंदरगाह (इंदिरा डॉकयार्ड), न्हावा सेवा और प्रस्तावित वाधवान पोर्ट को अगर सूर्परका या सोपारा की निरंतरता में देखा जाए तो प्राचीन और आधुनिक भारत को इतिहास एक कड़ी के रूप में जोड़ता हुआ नजर आता है।

❑❑❑

आलू, आलू और आलू

पंकज झा
(उपायुक्त, सीमाशुल्क निर्यात)

आलू, आलू और आज फिर आलू, नाश्ते में परांठे से शुरू होकर रात के खाने तक, फिर से आलू के व्यंजन। पता नहीं किसने बनाया ये सब्जी, जिससे पीछा छुड़ाना असंभव सा लगता है। शायद अपने स्वाद से यह बाजार में टिका हुआ है या फिर सस्ता होने के कारण सर्वसुलभ है। कोई भी मौसम हो, हमेशा उपलब्ध और उसी भाव पर। छोटे-बड़े और मंझोले आकार में ग्राहक की जरूरत और पसंद के अनुसार हमेशा-हमेशा बिकता रहा।

याद है बायोलॉजी के क्लास में जब 'साइंटिफिक नेम' रटने की बारी आती थी, तब यही नाम सबसे पहले जुबान पर चढ़ा था, सोलेनम ट्युबरेसम। आज भी यह किसी भी अन्य शाकभाजी के साथ सबसे आसानी से तैयार होनेवाला व्यंजन है। चिप्स से लेकर पकोड़े के वृहत साम्राज्य पर आसीन आलू, शायद ब्रिटिश साम्राज्य के बाद अगला यही है जिसके साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता। दक्षिण अमेरिका के देशों में यह 7000 सालों से उगाया जा रहा है, जो स्पेन के उपनिवेशों से युरोप में पहुँचा और पूरे विश्व में छा गया। जमीन के नीचे उगनेवाला यह कंद, जमीन के ऊपर आकर अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की तरह अजेय हो गया। आयरलैंड और रूस जैसे देश में अधिकांश लोगों का भोजन आलू पर ही निर्भर है। भारत के सुदूर पहाड़ी प्रदेशों में जहाँ कोई सब्जी नहीं उगती, पर आलू की फसल लहलहा उठती है।

जिज्ञासा से मन भर उठता है कि आखिर दक्षिण अमेरिका के एंडीज पर्वतश्रेणी के टिटिकाका झील के पास 12,500 फीट पर उगने वाला आलू भारत कैसे पहुँचा। भारत में आलू जहाँगीर के समय में यूरोप के पुर्तगाली और ब्रिटिश व्यापारी लेकर आये थे। सन् 1772-1785 तक भारत के गवर्नर जनरल वाटेन हेस्टिंग्स थे, जिन्होंने इसकी खेती को बढ़ावा दिया। इस प्रकार 18वीं सदी के अंत तक आलू भारत में फैल चुका था। उस जमाने में आलू की तीन किस्में ही प्रचलन में थी, फुलवा- जो कि मैदानी भागों में उगाया जाता था, गोला- जो कि आकार में गोल होता था और पहाड़ी इलाकों में उगाया जाता था और साठा जो कि साठ दिनों में पककर तैयार हो जाता था।

पेरू की फसल आलू की, भारत पहुँचने की यात्रा भी रोमांचक है। 15वीं सदी में जब पेरू, स्पेन का उपनिवेश बना तो यह यूरोप में आ गया। स्पेन में 'पापा' के नाम से जाने जानेवाले आलू को पुर्तगाल में 'बटाटा' कहा जाता है। पुर्तगाली जब इसे अपने उपनिवेश गोवा में लाए तो वहाँ भी यह 'बटाटा' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। पुर्तगाली व्यापारियों ने यह शब्द कैरेबियन द्वीपों के जनजातियों से सीखा था, जो जमीन के नीचे उगनेवाले सभी कंदमूलों को 'बटाटा' कहते थे। भारत में 'आलू' नामकरण, भारोपीय शब्द माना जाता है, जो भारतीय भाषा और यूरोपीय भाषा के मेल से व्युत्पन्न होता है। संस्कृत में खाने योग्य गोलाकार जड़ को आलु कहते हैं, लैटिन में इससे मिलता जुलता शब्द 'अल्लम' और ग्रीक में 'आल्लेन' है। अंग्रेजों ने इसे

'पोटैटो' नाम दे दिया।

आलू शब्द के संबंध में संस्कृत में एक प्रसिद्ध श्लोक है,

कन्दो बहुविधो लोकेआलुशब्देन भण्यते।
कच्चालु चैव घंटालु पिंडालु शर्करादिगम
काष्ठालु चैवमाद्यम स्यात तस्य भेदा अनेकशः

अर्थात, विभिन्न प्रकार के भूमिगत शाक के लिए आलु शब्द व्यवहार करते हैं। यथा कचालु, घंटालु, शर्करालु, काष्ठालु इत्यादि इनके प्रकार हैं। फारसी में कई गोलाकार फलों को आलू कहते हैं, जैसे जरदालू, खोर्मालू, शफ्तालू और आलूबुखारा वगैरह; लेकिन इनका संस्कृत के आलु से कोई संबंध नहीं है। फारसी में आलू को सीब- जमीन कहते हैं, अर्थात् जमीन का सेब। संभवतः यह डच भाषा से प्रभावित रहा होगा, क्योंकि डच में आलू को 'Earth Apple' कहते हैं।

विश्वप्रसिद्ध चित्रकार विन्सेंट वैन गॉग ने 1885 में एक ऑयल-पेंटिंग बनाई थी- 'द पोटैटो ईटर्स'। यह पेंटिंग बहुत लोकप्रिय हुयी, आज यह एम्सटर्डम (नीदरलैंड) के वैन गॉग म्यूजियम में संग्रहित है। यह माडर्न आर्ट एवं यथार्थवादी चित्रकला का सर्वोत्तम उदाहरण में से एक है। इस चित्र में पाँच लोगों का एक परिवार है, जो खाने के मेज पर भूने हुए आलू खा रहे हैं। इसकी पृष्ठभूमि से स्पष्ट है कि यह एक निम्नवर्गीय किसान परिवार है, जो अपनी क्षुधाशांति हेतू आलू पर ही निर्भर है। गॉग ने इसे अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति माना था। आलू के इस विषद महत्त्व का कला-क्षेत्र में भी उपस्थिति दर्ज है।

आलू, भारत में धान, गेंहू, मक्का और बाजरा के बाद सबसे अधिक उगायी जाती है। वेजिटेरियन हों या नॉन वेजिटेरियन, हर तरह के व्यंजन में इसकी पैठ है। इसका पौष्टिक मूल्य भले ही कम हो, लेकिन यह गरीब-अमीर हर वर्ग में बहुत ही चाव से खाया जाता है। पैकेट में बिकनेवाले चिप्स से लेकर सड़क के किनारे बिकनेवाले चाट के ठेले तक इसकी पहुँच है। गरीब शायद अपनी भूख मिटाने के लिए सस्ता एवं सर्वसुलभ खाना इसे मानते हैं और अमीर अपने चटखारे स्वाद के लिए इससे कई व्यंजन बनाते हैं। आलू सिर्फ खाने तक ही सीमित नहीं रहा, इसके कई औद्योगिक रूप भी हैं। यह ऐडहेसिव, बाईंडर, टेक्सचर और फिलर एजेंट के रूप में रंग, दवाई, कपडा, कागज़ और ऑयल ड्रिलिंग उद्योग में काम में लाया जाता है।

भारत में आलू की खेती शीतकाल में रबी की फसल के तौर पर की जाती है। इसकी उपज क्षमता अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक होने के कारण इसे अकाल-नाशक फसल भी कहा जाता है। यह भारत में सभी राज्यों के लगभग सभी भूभागों में उपजाई जाती है। भारत सरकार इसके गुणवत्ता एवं अत्यधिक उपज के लिए सतत प्रयासरत है। सन 1949 में शिमला के निकट कुफरी में केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र खोला गया था, आज यह भारत भर में अपने 7 उपकेन्द्रों के साथ कार्यरत है। ये केंद्र इनके कई किस्मों को भोगौलिक क्षेत्रों के अनुसार विकसित करते हैं, जो अधिक उपज के साथ रोगरोधक, कीटरोधक एवं कम से कम रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर निर्भर हों।

उर्दू के प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी को आलू के व्यंजन काफी पसंद थे। एक बार अपने मेजबान को इसके स्वाद से खुश होकर एक शेर सुना डाला था,

लाए हैं ढूंढ़ के बाजार से आलू अच्छे
इसमें कुछ शक नहीं हूर के खालू अच्छे

आलू की स्वीकार्यता और सार्वभौमिकता इस श्रेणी तक है कि इसके संबंध में एक प्रसिद्ध उक्ति है कि,

IF YOU DON'T LIKE POTATOES, YOU CANNOT BE TRUSTED

❑❑❑

गणतंत्र दिवस 2025 की झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस 2025 की झलकियाँ

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को प्रभावी करने के लिए अत्यावश्यक बातें

पौर्णिमा एन. सालवे
(वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

"राजभाषा सरल, अधिकांश जनता द्वारा समझे जाने वाली, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवहार को बखूबी चलाने में सक्षम होनी चाहिए।"
- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

महात्मा गांधी के उपरोक्त कथन में बताए गए गुणों की कसौटी पर हिंदी भाषा खरी उतरती है। हिंदी विश्व की सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषाओं में चीनी, स्पेनिश के बाद तीसरे नंबर की भाषा है। संपूर्ण विश्व में लगभग 615 मिलियन लोग हिंदी बोलते एवं समझते हैं। हिंदी भाषा सरल एवं आसानी से समझे जाने वाली भाषा है। इसका शब्द भंडार काफी समृद्ध है। हिंदी में नए-नए शब्दों के सृजन की भी क्षमता है।

हिंदी भाषा के इन्हीं गुणों को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का सम्मान प्रदान हुआ। यह निर्णय भी दिया गया की 26 जनवरी 1950 से 15 वर्ष तक अंग्रेजी का प्रयोग सरकारी कार्यों में उसी प्रकार होता रहेगा जैसे हो रहा है, परंतु 26 जनवरी 1965 के पश्चात समस्त कार्य केवल हिंदी में ही होंगे। हिंदी को राजभाषा के रूप में संविधान की धारा 343 (1) के द्वारा घोषित किया गया था। राजभाषा से संबंधित प्रावधान संविधान की धारा 343 से धारा 352 में वर्णित है।

राजभाषा के रूप में अपनाए जाने के 76 वर्ष बाद आज भी राजभाषा हिंदी अपना वह स्थान पाने से वंचित रह गई है, जिसकी वह हकदार है। आज भी अधिकतर सरकारी कामकाज अंग्रेजी में ही किए जाते हैं। हिंदी प्रयोग के आधार पर भारत को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है। 'क' क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, अंडमान और निकोबार दीप समूह दिल्ली संघ आदि राज्य आते हैं, जो हिंदी भाषी है। 'ख' क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा चंडीगढ़, दमन दीव तथा दादर और नगर हवेली समिति क्षेत्र आदि राज्य आते हैं और 'ग' क्षेत्र में अहिंदीभाषी क्षेत्र जैसे कि केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, तेलंगना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, आदि राज्य आते हैं। इस वर्गीकरण के अनुसार जवाहरलाल नेहरू सीमशुल्क भवन, मुंबई सीमशुल्क भवन का आंचल-II कार्यालय 'क्षेत्र ख' के अंतर्गत आता है। राजभाषा विभाग द्वारा हर वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार- उपरोक्त क्षेत्रों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु लक्ष्य की सुनिश्चिती की गई है जो, निम्न प्रकार हैः-

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 90% के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 60% के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%

10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यलयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	

15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	45%	35% (न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, 'ख' क्षेत्र में 30% और 'ग' क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए।	25%

वार्षिक कार्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत हमारे कार्यालय के लिए सुनिश्चित किए गए लक्ष्य के हम आस-पास हैं। भविष्य में हमारे कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी करने के लिए कई छोटी-छोटी किंतु अत्यावश्यक बातों का ध्यान रखना होगा, जैसे-

- कंप्यूटर पर हिंदी टंकण की सुविधा सुनिश्चित करना, जिसमें यूनिकोड सक्रिय करते हुए उसमें हिंदी की फोनेटिक टाइपिंग की सुविधा डाउनलोड करें, जिससे हिंदी टंकण सुविधाजनक होगा।
- अनुभाग में स्वतंत्र रूप से हिंदी पत्रों हेतु एक रजिस्टर तैयार करना, जिसमें आवक और जावक की प्रविष्टि करें, जिससे हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट बनाने में आसानी होगी।
- ई-ऑफिस में नई फ़ाइल का शीर्षक द्विभाषी रूप में लिखें।
- नेमी प्रवर्ती (routine matter) टिप्पणियों, पत्रों, आदेशों की पहचान करें। प्राप्त सामग्री को हिंदी अनुभाग को द्विभाषी बनाने हेतु सौंपे। भविष्य में द्विभाषी प्रारूपों टिप्पणियों का उपयोग अनिवार्य रूप से करें।
- टिप्पणी लिखते समय सरल एवं सुबोध हिंदी का प्रयोग करें। यदि एक बार कोई टिप्पणी हिंदी में लिख दी जाएगी तो आगे के अधिकारी भी उस पर हिंदी में ही अभियुक्ति लिखेंगे। इस प्रकार संपूर्ण टिप्पणी हिंदी में ही लिखी जाएगी।
- प्रपत्रों पर हस्ताक्षर आवश्यक रूप से हिंदी में करें।
- राजभाषा हिंदी में प्रवीण अधिकारियों को अधिकाधिक फाइल संबंधी कार्य सौंपे जिससे मूल रूप से मसौदा/ प्रपत्र का निर्माण हिंदी में हो सके। इसके लिए राजभाषा विभाग द्वारा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शामिल होकर पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करें।
- राजभाषा संबंधी सभी गतिविधियों जैसे- कार्यशाला, पखवाड़ा, राजभाषा प्रतियोगिताओं, व्याख्यान आदि में सभी कर्मचारी एवं अधिकारीगण भाग लें।
- कार्यालय में अंग्रेजी न बोल पाने या लिख पाने की हिचकिचाहट पर काबू करने के लिए हिंदी भाषा में आत्मविश्वासपूर्ण अभिव्यक्ति/दस्तावेज निर्माण करें साथ ही हिंदी अनुभाग से रिवार्ड प्राप्त करें।
- द्विभाषी फॉर्मों, निर्धारित प्रारूपों का अधिक प्रयोग करें।
- इस तरह बिना किसी विशेष तैयारी के और ऊपर दिए गए सरल सुझावों के माध्यम से दैनिक कार्यों में यथावश्यक परिवर्तन कर आप अपने कार्यों में राजभाषा का उपयोग कर राजभाषा हिंदी को एक सम्मानजनक स्थिति में पहुँच सकेंगे।

❑❑❑

विशाखा निखिल फडके
(कर सहायक)

कहानी अपनी सी

उसकी सुनी या अपनी कही
हर कहानी एक जैसी थी।
वो जी चुकी थी जो जिंदगी
मुझे अभी वो जीनी थी।

आँखों में उसके भी वही सपने
सपनों में थी वही चमक।
वही साथ अपनों का
वही गैर बने अपनों की दी हुई कसक।

उसमें भी था वही साहस
चाहत वही उड़ने की ।
वही जिंदगी से सीखे सबक
वही ललक दुनिया से जुड़ने की ।

थकान छुपाती वो मुस्कान
बातों में वो बुनता जहान।
वो गिरती रही और उठती भी...
वो गिरती रही और उठती भी...
ख्वाहिश बस
वो खुला आसमान।

❑❑❑

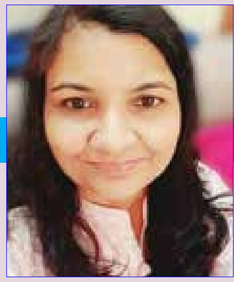

पूनम राजपूत
(संरक्षक - प्रमोद कुमार चौहान, सहायक आयुक्त, लेखापरीक्षा)

विरक्ति की शिला पर

अंशुमाली सा सुंदर पैकर
क्लांत कमल सा पड़ा मही पर
मृतचेल, घृत चंदन देह पर
लाद चला सब पाप पुण्य वो
रूह चली है कासी तट पर।।

बिछी रह गयी चौपड़ देखो
उड़ चले पखेरू शाम के
मणिकर्णिका के घाट पर
खाली पड़े हैं पिंजरे चाम के।।

जोड़ जमाई, ठाठ धरे थे
गेह भीतर सोनतारे जड़े थे
अब नहीं रहे कुछ काम के
पाप की गठरी मुंशी खोले
संग जाऊंगी, बैरन बोले।।

नब्ज़ जो छूटी देह भी रूठी
पड़े रहे मखमल आराम के
मणिकर्णिका के घाट पर
खाली पड़े हैं पिंजरे चाम के।।

❑❑❑

दिनांक : 17.07.2025 को सुरजीत भुजबल सदस्य (सीमाशुल्क) सी.बी.आई.सी. की मुंबई भ्रमण की झलकियाँ

दिनांक : 03.02.2025 को योगेन्द्र गर्ग सदस्य, आईटी और करदाता सेवाएँ एवं प्रौद्योगिकी सी.बी.आई.सी. की मुंबई भ्रमण की झलकियाँ

संस्मरण

आर.एन. पाठक

सहायक आयुक्त सीमाशुल्क (आयात-I)

मैंने, पदोन्नति के बाद जून 2023 के मध्य सहायक आयुक्त के रूप में आयुक्तालय (आयात-।) में कार्यभार ग्रहण किया। मुझे आयात-। में समूह 4 का प्रभार दिया गया। जहां मुझे, अध्याय 72 और 73 जो कि इस्पात उत्पाद से संबंधित है, के तहत FAG और PAG (अध्याय 74 से 83) के कार्य का पर्यवेक्षण (supervision) करना था। हालांकि इसके पहले मैं वस्तु एवं सेवा कर, जोगबनी और राक्साल (Jogbani and Raxaul) में लैंड कस्टम्स स्टेशन (LCS) पर अधीक्षक के रूप में कार्य कर चुका था; और अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा, मुंबई पर भी प्रतिनियुक्ति पर कार्य कर चुका था; लेकिन वहाँ की कार्य-प्रणाली, वहाँ के कार्य-स्वरूप और आयात-। में मूल्यांकन समूह के कार्य में कोई समानता नहीं है।

जब मैंने सहायक आयुक्त के रूप में समूह-4 में कार्यभार ग्रहण किया तो मूल्यांकन के कार्य के बारे में मुझे उत्सुकता भी थी और मेरे लिए यह एक नई चुनौती भी थी। FAG ग्रुप में पूरे भारत के सीमाशुल्क विभाग से बिल आफ एंट्री, मूल्यांकन के लिए, अध्याय 72 और 73 के तहत हमारे समूह में आ सकता था। आरंभ में मैंने अपने मूल्य निरूपक से इस बात पर चर्चा की कि सहायक आयुक्त के रूप में बिल आफ एंट्री के मूल्यांकन में मुझे किन-किन बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मुझे बताया गया कि सबसे पहले आयातित माल का मूल्य जो आयातक के द्वारा घोषित किया गया है वह उस समय में उसी तरह के माल के आयात की कीमत के आसपास है या नहीं अगर आयातित माल का मूल्य 20-25% से ज्यादा कम (नीचे की ओर) है तो आयातक से प्रश्न (QUERY) के माध्यम से कारण पूछा जा सकता है; और फिर अगर आयातित वस्तु पर किसी तरह का अधिसूचना आधारित शुल्क लाभ आयातक द्वारा लिया जा रहा है तो उस अधिसूचना की एक बार जाँच कर लेना चाहिए; और दूसरे दस्तावेज़ जैसे उत्पत्ति प्रमाण पत्र (Certificate of origin) आदि जो कि आयातित वस्तु पर लगने वाले शुल्क को प्रभावित कर सकते हैं उनकी भी इस संबंध में जाँच की जानी चाहिए।

प्रत्येक बिल आफ एंट्री के बारे में जोखिम प्रबंधन प्रणाली (RMS) के दिशा-निर्देशों पर भी ध्यान देना चाहिए; और जहां तक संभव हो प्रथम जाँच (First Check) का आदेश अगर जोखिम प्रबंधन प्रणाली (RMS) में विशेष रूप से आया हो तभी प्रथम जाँच (First Check) किया जाना चाहिए। हालांकि इन सब बिंदुओं को मूल्य निरूपक अधिकारी देखते हैं; और संतुष्ट होने पर ही बिल आफ एंट्री को सहायक आयुक्त के लॉगिन में आगे बढ़ते हैं।

आरंभिक दौर में मुझे कुछ परेशानियां हुई लेकिन धीरे-धीरे मैं मूल्यांकन के कार्य को सही ढंग से निष्पादित

करने लगा। यहां विशेष रूप से मैं अपने कुछ सहकर्मियों का नाम जैसे श्री एस. के. आर. रेड्डी साहब और कृष्णा एस. नाईक साहब और श्री महेश कुमार, उप आयुक्त जो कि अभी न्हावा शेवा में पदस्थ हैं, के साथ विचार-विमर्श करता था और उनके सुझाव के आधार पर समस्या का हल निकालता था।

यहां मैं इस बात का उल्लेख करना चाहता हूं कि एक अधिकारी के रूप में मैं अपने 34 साल के सेवाकाल में विभाग की बहुत सी संरचनाओं में काम किया है; लेकिन सीमाशुल्क मुंबई में मैंने महसूस किया कि यहां के अधिकारियों के बीच पारस्परिक विचार-विमर्श और आपस में सहयोग की भावना अन्य स्थानों से ज्यादा है।

यहां मैं यह भी जोड़ना चाहूंगा कि मेरे आयुक्त, श्री विवेक पाण्डेय सर और अपर आयुक्त, श्री मल्लिनाथ के. जेउरे साहब हम लोगों के साथ किसी भी समस्या पर विचार-विमर्श के लिए हमेशा तैयार रहते थे; जिससे न केवल हम लोगों का मनोबल बढ़ता था बल्कि हमारे कार्य निष्पादन की गुणवत्ता भी बेहतर होती थी।

मेरा यह संस्मरण अधूरा रह जाएगा अगर मैं नवीन सीमाशुल्क भवन की गरिमा की चर्चा नहीं करता हूँ। यह पुराना भवन, सीमाशुल्क में आए परिवर्तनों का मूक गवाह रहा है। यह भवन, अनेक मुख्य आयुक्त और आयुक्त के सेवाकाल अवधि का मूक रूप से साक्षी रहा है। सामान्य दिनों में तो नवीन सीमाशुल्क भवन में बहुत चहल-पहल रहता है; लेकिन जब मैं रविवार या राजपत्रित अवकाश (GH) पर हॉलिडे ड्यूटि में सीमाशुल्क भवन में आता था तो चारों तरफ शांति फैली रहती थी; और मुझे लगता था कि सीमाशुल्क भवन मूक रहते हुए भी बहुत कुछ कह रहा है।

हमारे आयुक्त, श्री विवेक पाण्डेय साहब ने इसके सौंदर्यीकरण के लिए अनेकों सराहनीय कदम लिए हैं; जिसमें सबसे प्रमुख है- सामने वाले गेट के स्टेयरकेस की साज-सज्जा और यह स्टेयरकेस फोटो-गैलरी की अनेक तस्वीरों, जो कि सीमाशुल्क के कार्यकलापों से संबंधित हैं, से सुसज्जित है।

यूं तो सालों भर सीमाशुल्क भवन में मरम्मत के कार्य चलते रहते हैं; लेकिन मेरा विचार है कि एक बार अधिक बजट के साथ पूरे नवीन सीमाशुल्क भवन का नवीकरण किया जाए जिससे इस पुराने भवन की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए एक नया स्वरूप प्रदान किया जा सके। इसी के साथ मैं इस आलेख को समाप्त करता हूँ।

❑❑❑

प्रायश्चित

ऑपरेशन थियेटर के बाहर काफी भीड़ थी। तभी एक नर्स बाहर आकर बोली- "अब शीघ्र ही ऑपरेशन होनेवाला है.... पेशेंट को ओ नेगेटिव ब्लड की जरूरत है।"

तभी एक अधेड़ उम्र का आदमी आगे बढ़कर बोला- "हाँ मेरा ब्लड ओ नेगेटिव है, आप ले लीजिए।" नर्स ने गौर से अज़नबी को देखा। दुर्घटनाग्रस्त नवयुवक को लानेवालों में यह आदमी तो नहीं था और न ही उसका रिश्तेदार। शायद मानवता का पुजारी हो। अत: उस आदमी को लेकर नर्स अंदर चली गई।

बाहर लोग दुर्घटनाग्रस्त नवयुवक के लिए दुआएं करने लगे और एक्सीडेंट कर भाग जाने वाले को कोसने लगे। शायद सामने मिल जाये तो लात-घूंसों से उसकी खातिरदारी कर दें। खैर! सभी की सहानुभूति उस नवयुवक के साथ पल-पल बढ़ती रही।

थोड़ी देर बाद डॉक्टर साहब बाहर आकर बोला- "नाऊ द यंग मैन इज आऊट ऑफ डेंजर।"

तब भीड़ उस अधेड़ को तलाशने लगी, जिसने अपना खून देकर नवयुवक के प्राण की रक्षा की थी। एकाएक सामने वह अधेड़ व्यक्ति नजर आया, जिसके अगल-बगल पुलिस दिखी। लोगों को माजरा समझ में नहीं आया। मानवता की ये कैसी सजा? भीड़ के समक्ष वह सिर्फ इतना ही कह पाया- "मैं तो आया था, आत्मसमर्पण करने पर अपना खून देकर प्रायश्चित का सुख भी भोग लिया।"

- अशोक पीपलीवाल

❖❃❖

संस्मरण

अमन कुमार
(अधीक्षक)

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात), मुंबई, में काम करने का मेरा अनुभव

यहां विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात), में काम करते हुए मेरा अनुभव बेहद समृद्ध और चुनौतीपूर्ण रहा है। SIIB इम्पोर्ट में काम करना एक अनूठा अनुभव है, जहां जाँच अधिकारी के रूप में मुझे विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। काम के दौरान मुझे नए-नए मामलों की जाँच का अवसर मिला, जिससे मेरी जाँच क्षमताओं में वृद्धि हुई। हर दिन यहां कुछ नया सीखने को मिलता है, चाहे वह विभिन्न कानूनों का गहन अध्ययन हो या फिर आयात नियमों की बारीकियों को समझना।

जाँच अधिकारी के रूप में, हर मामले में सावधानीपूर्वक अध्ययन और साक्ष्य एकत्र करना आवश्यक होता है। यहां के कार्य करने की परिस्थितियाँ कभी-कभी बेहद तनावपूर्ण हो सकती हैं, खासकर जब महत्वपूर्ण मामलों की जाँच चल रही हो। लेकिन इन चुनौतियों के बीच मैंने कानून और प्रक्रियाओं की गहरी समझ विकसित की है। हर नए केस के साथ कुछ नया सीखने का मौका मिलता है, जिससे मेरी व्यावसायिक दक्षता में सुधार हुआ है। कुल मिलाकर, SIIB इम्पोर्ट में काम करना एक ऐसा अनुभव है, जिसने मुझे व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों स्तरों पर समृद्ध किया है, और मुझे गर्व है कि मैं इस महत्वपूर्ण भूमिका का हिस्सा हूं।

❑❑❑

शिव शंकर राम
(मूल्य निरूपक अधिकारी)

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात), मुंबई, में काम करने का मेरा अनुभव

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात) में काम करने का मेरा अनुभव बेहद चुनौतीपूर्ण और सीखने से भरा रहा है। इस शाखा में काम करते हुए मैंने विभिन्न प्रकार के मामलों की जाँच की, जिनमें दस्तावेज़ों की गहन छानबीन और वित्तीय लेन-देन का पता लगाना शामिल था। मैंने सरकारी एजेंसियों जैसे राज्य परिवहन कार्यालय, राजस्व खुफिया और सीमा शुल्क निवारक के साथ-साथ गैर-सरकारी संगठनों, विशेषकर टेलीफोन कंपनियों के साथ घनिष्ठ सहयोग किया।

इस अनुभव के दौरान मैंने कस्टम ड्यूटी से बचने के लिए आयातकों द्वारा अपनाई जाने वाली नई और उभरती हुई रणनीतियों की पहचान की। यह काम निरंतर सीखने और खुद को नए तरीकों के लिए तैयार रखने की मांग करता है। मैंने ड्यूटी चोरों की मानसिक स्थिति और उनकी सोच को समझने में भी महारत हासिल की, जिससे उनके अगले कदम का अनुमान लगाना संभव हुआ।

इस दौरान, अदालत के मामलों की तैयारी और सुनिश्चित करना कि सबूत ठोस और कानूनी रूप से स्वीकार्य हों, मेरे प्रमुख कार्यों में शामिल था। कुल मिलाकर, यह अनुभव न केवल मेरे पेशेवर कौशल को निखारने वाला था, बल्कि इसने मुझे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग का महत्व भी सिखाया।

❑❑❑

संस्मरण

दीपा कोशी

(मूल्य निरूपक अधिकारी)

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात), मुंबई, में काम करने का मेरा अनुभव

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात) मुंबई में काम करने का मेरा अनुभव अत्यंत समृद्ध और शिक्षाप्रद रहा है। इस भूमिका में रहते हुए मैंने कई जटिल मामलों की जाँच की, जिसमें दस्तावेजों की बारीकी से जाँच और वित्तीय लेन-देन की निगरानी शामिल थी। यहां मैंने सीखा कि अवैध गतिविधियों को कैसे रोकना है। यहां काम करना पेशेवर कौशल को बढ़ाता है और सीमा शुल्क के नियमों को समझने में काफी हद तक मदद करता है।

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात) मुंबई में काम करते हुए मेरा प्रोफ़ाइल दस्तावेजों की जाँच और डेटा विश्लेषण पर केंद्रित रहा है। इस भूमिका में, मैंने विभिन्न प्रकार के दस्तावेज़ों की गहन जाँच की, जिसमें आयात से संबंधित कागजात, वित्तीय रिकॉर्ड, और लेन-देन से जुड़े विवरण शामिल थे। मेरे कार्यों में दस्तावेजों की प्रामाणिकता की पुष्टि करना और इसमें छिपी जानकारी या विसंगतियों को पहचानना शामिल था।

यह भूमिका न केवल तकनीकी कौशल की मांग करती है, बल्कि इसमें तस्करों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले नए तौर-तरीकों की समझ भी महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही, मैं यह सुनिश्चित करती थी कि सभी दस्तावेज़ और डेटा कानूनी प्रक्रिया के लिए सही तरीके से तैयार और प्रस्तुत किए जाएं। इस प्रकार, दस्तावेज़ों की जाँच और डेटा विश्लेषण के माध्यम से मैंने आयात से जुड़े कई जटिल मामलों को सफलतापूर्वक सुलझाया।

❑❑❑

पवन कुमार दहिया

(अधीक्षक, SIIB - आयात)

विशेष खुफिया और जाँच शाखा (आयात), मुंबई, में काम करने का मेरा अनुभव

मैं विशेष जाँच और खुफिया शाखा (SIIB) - आयात-1, में वरिष्ठ खुफिया अधिकारी के रूप में कार्यरत हूँ। न्यू कस्टम हाउस जोन-I की विशेष जाँच और खुफिया शाखा (आयात में, मेरी जिम्मेदारी आयात से जुड़े मामलो की जाँच करना, तस्करी रोकना और खुफिया जानकारी एकत्रित करना और विश्लेषण करना है।

मेरे कार्य के तहत, मैं आयात संबंधी दस्तावेजो की जाँच करता हूँ, और उनके खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करता हूँ। इसके अलावा मेरी जिम्मेदारी में विभिन्न विभागों के आदान प्रदान के साथ समन्वय करना और खुफिया जानकारी भी शामिल हैं। मेरा उद्देश्य सरकारी नियमों और नीतियों का पालन सुनिश्चित करना और किसी भी अवैध गतिविधियो को रोकना है।

❑❑❑

संस्मरण

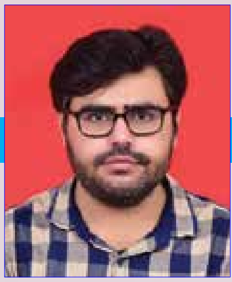

अनिल कुमार मीणा
(मूल्यांकन अधिकारी)

मेरे फेसलेस मूल्यांकन के अनुभव

समूह-6, आयात-1 आयुक्तालय, नवीन सीमा शुल्क जॉइनिंग के समय फेसलेस मूल्यांकन मेरे लिए नया कार्यभार था, ये पहली बार था जब मूल्यांकन अधिकारी के रूप मे मुझे ये जिम्मेदारी दी गई जो कि प्रारंभ में थोड़ा मुश्किल और चुनौतीपूर्ण रहा। जहां अप्रैज़र को आयातक के द्वारा फाइल की गई बिल ऑफ एंट्री को उचित तरीके से जाँच करके मूल्यांकन करना होता है। चूँकि सारे पहलुओं को ध्यान में रखना होता था की ड्वेल टाइम भी ना बड़े और मूल्यांकन भी सटीक हो। साथ मे क्वेरी की भी पाबंदियों ने इस चुनौती को और बड़ा दिया। पर समय के साथ अपने वरिसठों के मार्गदर्शन मे और साथी लोगों से जानकारी ले लेकर मूल्यांकन का कार्य करने लगे। थोड़े समय के बाद जब अल्प मूल्यांकन के, गलत वर्गीकरण और नीति के उल्लंघन के मामले सामने आने लगे ये रुचिकर लगने लगा। यह एक अच्छी अनुभूति थी कि देश के राजस्व वृद्धि मे मेरा भी एक रोल है।

इस दौरान अच्छा मूल्यांकन मेरे लिए एक चुनौती रही क्यूंकी सीमा शुल्क कानून और दरों की जानकारी और साथ ही बिल ऑफ एंट्री आयातक के स्व मूल्यांकन जो भी कमी/गलती होती थी उसकी क्वेरी मे उचित व्याख्या करना बहुत जरूरी होता है। मेरी कोशिश यही रहती थी कि कम से कम शब्दों मे जो भी कमियाँ/गलतियाँ है पार्टी को समझ आ जाए। ज्यादातर समय मैंने इसमें कामयाबी हासिल की और पार्टी ने अपने स्व मूल्यांकन जो भी बदलाव की जरूरत होती थी उस पर अपनी सहमति दी। कभी ऐसा भी हुआ की पार्टी मेरे मूल्यांकन से सहमत नहीं होती थी उस केस पार्टी को स्पीकिंग ऑर्डर जारी करना होता था।

इस दौरान बहुत बार ऐसे मामले भी पता चले जब प्रथम जाँच परीक्षण के दौरान आयात का सामान गलत घोषित किया गया, ज्यादा मात्रा मे मिला या किसी भी तरह की आयात नीति का उल्लंघन हुआ, ऐसे मामलों को मूल्यांकन के दौरान गोदी परीक्षा रिपोर्ट के आधार पर उचित विभागीय टिप्पणी डाल कर बिल ऑफ एंट्री को बंदरगाह मूल्यांकन समूह को उचित कार्यवाही के लिए प्रेषित किया।

इस कार्यकाल के दौरान कुछ और चुनौतियों का सामना करने को मिला जब अक्टूबर 2023 में चैप्टर 39 में अनिवार्य अतिरिक्त क्वालीफायर्स जोड़े गए थे उस समय चूँकि ये जानकारी सामान की बुनियादी सामग्री को लेकर थी और आयातक के पास ही होती है बहुत बार आयातक बिल ऑफ एंट्री दाखिल करने के समय उचित तरीके से अनिवार्य अतिरिक्त क्वालीफायर्स घोषित नहीं करता था तो मूल्यांकन अधिकारी को वो जानकारी फ़ीड करनी होती थी जो की उसके पास उपलब्ध नहीं थी। ऐसे मामलों में एक प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। हाल ही में अभी कुछ समय से बिल ऑफ एंट्री सहायक दस्तावेज खुल नहीं रहे हैं ये भी एक चुनौती है कि बिना दस्तावेज जाँचे कैसे बिल ऑफ एंट्री का मूल्यांकन किया जाए। इसके अतिरिक्त बहुत बार ईडीआई ICES सिस्टम बहुत धीमा काम करता है जिससे एक बिल ओफ एंट्री को प्रोसेस करने में बहुत समय लग जाता है। ये कुछ दिक्कतें थी जिनका सामना इस दौरान करना पड़ा। चीजें और भी मुश्किल हो सकती थी पर मेरे उच्च अधिकारियों के उचित मार्गदर्शन में जो भी समस्या आई उसका समाधान निकलता रहा और मूल्यांकन समय के साथ आसान होता चल गया।

❑❑❑

संस्मरण

मयंक कुमार
(मूल्यांकन अधिकारी)

मेरे फेसलेस मूल्यांकन के अनुभव

मैं पिछले एक साल से मूल्यांकन समूह में एक मूल्यांकन अधिकारी के रूप में काम कर रहा हूं। मुझे एक मूल्यांकन अधिकारी का काम बहुत पसंद आया। समूह IV के मूल्यांकन में, लौह और इस्पात उत्पादों के प्रवेश बिलों का मूल्यांकन किया जाता है। उनके मूल्य एवं कर्तव्य निर्धारित होते हैं।

फेसलेस मूल्यांकन में, भारत में कहीं भी दर्ज की गई बिल ऑफ एंट्री निर्दिष्ट सीमा शुल्क भवनों (Customs House) में बनाए गए उत्पादों से संबंधित किसी भी फेसलेस मूल्यांकन समूह (एफएजी) को आवंटित किए जाते हैं। तो, ऐसा हो सकता है कि दिल्ली में प्रवेश का बिल दायर किया गया हो, मुंबई में बैठे मूल्यांकन अधिकारी द्वारा मूल्यांकन किया जा सकता है। हालाँकि, कुछ मुद्दे भी हैं जिनका सामना फेसलेस मूल्यांकन में करना पड़ता है। यदि बिल ऑफ एंट्री में कोई एक या उससे अधिक कमी है, तो उसे उस मुद्दे के संबंध में एक प्रश्न (query) उठाना होगा।

मानक अभ्यास (standard practice) के अनुसार, दूसरी क्वेरी (query) संबंधित मूल्यांकन समूह के जेसी (JC)/एडीसी (ADC) की अनुमति से उठाई जाती है। आयातक/सीएचए इस तथ्य से भली-भांति परिचित हैं। उनमें से कुछ ही, सभी नहीं, कभी-कभी इस मानक अभ्यास का लाभ उठाते हैं जिसके परिणामस्वरूप समूह के औसत मूल्यांकन समय में वृद्धि होती है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी बिल ऑफ एंट्री में एक से अधिक कमियाँ हैं, उदाहरण के लिए मूल्य कम है, बीआईएस (BIS) और एमटीसी (MTC) नहीं है, तो एक मूल्यांकन अधिकारी इन सभी बिंदुओं के संबंध में एक प्रश्न उठाता है।

कुछ उदाहरणों में, यह देखा गया है कि आयातक/सीएचए किसी एक बिंदु का उत्तर देता है और शेष दो बिंदुओं के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं करता है। उपरोक्त उदाहरण की तरह, आयातक उत्तर दे सकता है कि उसने एमटीसी अपलोड कर दिया है लेकिन बीआईएस और कम मूल्य के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। क्योंकि वे जानते हैं कि दूसरे प्रश्न के लिए मूल्यांकन अधिकारी को एडीसी/जेसी की अनुमति लेनी होगी। इसलिए वे मौका लेते हैं।

आइए एक और उदाहरण लेते हैं, अधिसूचना संख्या 55/2023 दिनांक 03.01.2024 के अनुसार, जिसके द्वारा सीटीएच 7318 के तहत थ्रेडेड लेखों की आयात नीति को "मुक्त" से "निषिद्ध" में बदल दिया गया है। हालाँकि, यदि माल का सीआईएफ मूल्य रुपये 129/- या अधिक प्रति किलोग्राम है तो आयात मुफ़्त है। अब ऐसी स्थिति की कल्पना करें जहां एक आयातक कई वस्तुओं का आयात करता है जिसमें 3 वस्तुएं उपर्युक्त अधिसूचना के अंतर्गत आती हैं और उनका मूल्य 129/- रुपये प्रति किलोग्राम से कम है। ऐसे परिदृश्य में, एक मूल्यांकन अधिकारी उस संबंध में एक प्रश्न उठाता है लेकिन कभी-कभी आयातक/सीएचए उत्तर देते हैं कि उनका मूल्य 129/- रुपये प्रति किग्रा से अधिक है, वे संपूर्ण मूल्यांकन योग्य मूल्य को कुल भार से विभाजित करते हैं. उन्हें यह एहसास नहीं है कि उनके सभी सामान उस अधिसूचना के दायरे में नहीं आते हैं और क्वेरी केवल 3 वस्तुओं से संबंधित है जो सीटीएच 7318 के अंतर्गत हैं।

इस तरह वे समय खरीदते हैं (Delay), जिसके परिणामस्वरूप समूह के औसत मूल्यांकन समय में अतिरिक्त देरी होती है।

❑❑❑

काम का अनुभव

उदय कुंदर
(लिपिक)

मेरे कार्यालय का अनुभव

मेरे कार्यालय का नाम केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क (CBIC) है। यह आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर लगाए जाने वाले शुल्क को एकत्रित करता है। केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क (CBIC) अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, डॉक, और कार्गो जैसे विभागों पर अपना नियंत्रण रखता है और देशहित में दिन-रात काम करता है। यह सोना, चांदी, ड्रग्स, हीरे, और जानवरों आदि की तस्करी को रोकता है, जिससे देश को बड़ा धन लाभ होता है।

मुंबई में इसकी कई शाखाएँ हैं। पहले इसे समाहर्ता कार्यालय के नाम से जाना जाता था, अब इसका नाम बदलकर मुख्य आयुक्त और प्रधान आयुक्त (सामान्य) कर दिया गया है।

मैं इस कार्यालय में अक्टूबर 1985 से कैंटीन के धारक, परिचारक, और लिपिक के रूप में कार्यरत हूँ। कैंटीन के अपने कार्यकाल के दौरान, मुझे कनिष्ठ अधिकारी से लेकर वरिष्ठ अधिकारियों तक की सेवा करने का अवसर मिला है।

मैं विभाग की निवारक सोसायटी, कल्याण समिति, पेंशनर कल्याण समिति और निरंतर कैंटीन एसोसिएशन का सदस्य रहा हूँ। कार्यालय की ओर से मुझे उद्योगपतियों, राजनेताओं और फिल्मी दुनिया से जुड़े लोगों के साथ काम करने का अवसर मिला है। मैंने कुछ हीरो और हीरोइनों को भी अपनी सेवा दी है। इसके अलावा, मैं कुछ प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ियों से भी मिला हूँ और उनसे सम्मान प्राप्त किया है।

मुंबई सीमाशुल्क विभाग के महान व्यक्तित्व, स्वर्गीय श्री बाबू जमादार लक्ष्मण जी और स्वर्गीय श्री एल. डी. अरोड़ा सर, और निवारक विभाग के अनेक अधिकारियों ने भारत का नाम ऊँचा किया है। मैं उन्हें दिल से सलाम करता हूँ।

मुझे कार्यालय की ओर से लाइफटाइम कस्टम्स एप्रिसिएशन अवॉर्ड, कस्टम्स इंडिपेंडेंस डे अवॉर्ड, और विजिलेंस डे अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। मैं अपने विभाग का बहुत आभारी हूँ और हृदयपूर्वक इसका अभिनंदन करता हूँ। ❑❑❑

मजदूर दिवस

पैसेंजर ट्रेन जब स्टेशन पर रूकी तो लाला जी अपने सामान के साथ उतरे। लाला जी ने स्टेशन के चारों तरफ नजर दौड़ाई पर कहीं भी कुली नजर नहीं आया। छोटा-सा स्टेशन और उतरने वाले बस-दो-तीन यात्रीगण। भला, कुली कहाँ से रहेगा। तभी सामने एक मजदूर जैसा आदमी दिखा। लाला ने उसे इशारे से बुलाया और पूछा- "कौन हो तुम?"

"एक मजदूर।"

लाला ने सोचा अब काम बन जाएगा। अत: झट से बोला- "यह सामान बाजार तक ले चलना है।"

"ले चलूंगा।"

"कितना पैसा लोगे?"

"आज मैं मोल-भाव नहीं करूंगा जो वाजिब समझें दे दीजिएगा।"

"मोल-भाव क्यों नहीं करोगे?"

"सेठ जी, आज मजदूर दिवस है। किसी वजह से मजदूरी न कर मजदूर का नाम बदनाम नहीं करना चाहता।"

लाला जी के मन में तब सहानुभूति का भाव जाग उठा और गायब हो गई-उपेक्षा की भावना।

- उद्देश्य सचान

देवेन्द्र कुमार मीणा
(निवारक अधिकारी, सीमाशुल्क)

गुजरता वक्त

तय किया था जो निभाने का, वो वादा तुम्हारा था,
जो राहें तुमने खुद चुनी, वो मंजिल तुम्हारी थी,
फिर क्यों कहते हो, जो हुआ सही नहीं हुआ,
हालातों को दोष क्यों देते हो,
जो भी होगा सुधर जाएगा।

तुम्हारी जिंदगी की किताब सिर्फ तुम्हारे पास है,
अगर अपने किरदार की मैं उसमे बात करूँ;
तो जो मेरे हिस्से आएगा, शिद्दत से निभाऊँगा,
अगर परिणाम की मैं बात करूँ,
तो वो भी शायद वक्त ही बताएगा,
मेरा क्या, ये भी तो वक्त की चाल है,
जब मेरा आएगा, तो मैं भी गुजर जाऊँगा।

तुम जिंदगी के कीमती एहसासों में एक हो,
जिसे मैं हमेशा महसूस करना चाहता था,
तुम वही खास शख्स हो मेरे लिए,
जिसके साथ मैं पूरा सफर गुजारना चाहता था,
खोने और पाने की फिक्र में इतना मत सोचा करो,
जो तुम्हारा है, वो कहीं नहीं जाएगा,
और जो नहीं है, कितना भी खास हो,
वक्त आने दो, वो भी गुजर जाएगा।

मैं जहाँ भी ठहरा, चला, दौड़ा... संभला,
यही समझा, कि तुम हमेशा साथ हो,
जो भी सोचा, पढ़ा, लिखा... समझा,
यही महसूस किया, कि तुम सबसे जरूरी एहसास हो,
जिसे भी सुना, मिला... देखा,
यही पाया, कि तुम सबसे समझदार हो,
मगर अब पलट कर देखा तो ध्यान आया,
जहाँ पहुँचा, जिसे समझा, जिसे पाया,
वक्त पर याद आया कि ये भी गुजर जाएगा।

❑❑❑

दिनांक : 14.09.2024 - 28.09.2024 तक आयोजित हिंदी पखवाड़ा की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़े के समापन / पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़े के समापन / पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

धर्मवीर चौहान
(कनिष्ठ अनुवाद, अधिकारी)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता... जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है... ऐसी बुद्धिमत्ता जो बनावटी हो, जो मानव द्वारा बनाई गई हो... अर्थात जिसका मानव द्वारा निर्माण किया गया हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता विज्ञान की एक चमत्कारी खोज है। इसे आग की खोज से भी बड़ा चमत्कार कहा जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसे निर्जीव वस्तुओं को निरूपित करती है, जो मानव की तरह दिमाग का प्रयोग करते हैं, जो सोच सकते हैं, जो ऐसा व्यवहार करते हैं, जैसा मानव करता है।

स्मार्ट फोन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग देखने को मिलता है। एप्पल कंपनी के स्मार्टफोन में 'सेरी' का कार्य प्रशंसनीय है। हम सेरी को आदेश देते हैं- सेरी बिजली का बिल भर दो; और फिर सेरी कहती है- डन (done).... अर्थात बिजली का बिल भरा गया। इस तरह से हमारे आदेश पर सेरी सारा बिल-चाहे वह बिजली का बिल हो, चाहे गैस का बिल हो, चाहे मोबाईल रिचार्ज का बिल हो-बहुत आसानी से भर देती है। सेरी इसके अतिरिक्त हमारे वॉयस कमांड के अनुसार अनेक कार्य कर सकती है।

ऑटोमोबाईल के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अच्छा उदाहरण देखने को मिलता है। हम 'टेस्ला' कार के बारे में जानते हैं। 'टेस्ला' कार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा चलती है। 'टेस्ला' कार को कोई मानव नहीं चलाता है। हमें केवल कार में बैठना पड़ता है, बाकी का कार्य खुद कार ही करती है। हमें जहां कहीं भी जाना होता है, वह कार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आधार पर हमें वहाँ पहुँचा देती है।

उत्पाद निर्माण कारखानों में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अच्छा प्रयोग देखने को मिलता है। आज मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में उच्च तकनीकी वाली मशीनों को अधिष्ठित किया गया है। फैक्ट्री, कंपनियों, उद्योगों में सारा कार्य मशीनों द्वारा किया जा रहा है। मशीनें रात-दिन बिना रुके काम करती हैं; इसके फलस्वरूप हमारा उत्पादन कई गुना बढ़ गया है। इस तरह से कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाली मशीनों ने हमें बहुत लाभान्वित किया है।

मानव रोबोट कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अच्छे से प्रदर्शित करते हैं। हमने 'सोफिया' नामक रोबोट के बारे में सुना है। सोफिया एक मानव रोबोट है, जो मानव की तरह व्यवहार करती है; मानव की तरह बोल सकती है; हमसे हाथ मिला सकती है; हमारे प्रश्नों के उत्तर दे सकती है। रोबोट ने हमारे जीवन को और आरामदायक बना दिया है। आज रोबोट हमारे लिए भोजन पका सकते हैं; हमें भोजन परोस सकते हैं। अंतरिक्ष अभियानों में रोबोटों को भेजा जा सकता है। आग बचाव कार्यों में रोबोट अच्छी भूमिका निभाते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा ही गूगल हमारे मन-पसंद की वस्तुओं का ऐड (विज्ञापन) हमें दिखाता रहता है। उदाहरण के लिए यदि हम अपने स्मार्ट फोन पर 'नाईक' कंपनी का जूता खोजते हैं तो हमें लगभग अन्य सभी मोबाईल कार्यों में उसी जूते का ऐड (विज्ञापन) देखने को मिलता है।

सभी आविष्कार के दो पहलू होते हैं.... सकारात्मक एवं नकारात्मक। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (मानव रोबोटों) ने न जाने कितने व्यक्तियों का रोजगार छीन लिया है। जब सारा कार्य रोबोट करते हैं तो मानव बेरोजगार हो जाता है।

इसके अतिरिक्त रोबोटों से हमें खतरा भी है। रोबोट अपने दिमाग का इस्तेमाल कर, भविष्य में, हम मानव के प्रति युद्ध भी प्रारंभ कर सकते हैं। अच्छा यही होगा कि हम इन रोबोटों पर अच्छे से नियंत्रण रखें। हमें उन पर नियंत्रण रखना है, न कि उन्हें हम पर नियंत्रण रखने देना है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुई है। आज हम बहुत सारे कार्य मानव रोबोटों की सहायता से कर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमें एक विकसित सृष्टि का झलक दिखाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का ज्यादा से ज्यादा विकास होना चाहिए; क्योंकि इससे हमारी तकनीकी का विकास होगा। इसका प्रयोग हमें ऐसे कार्यों में करना है; जिनसे हमें लाभ प्राप्त हो। हमें यह भी ध्यान देना है कि इनसे मानव का रोजगार ना छीने। मानव रोबोट का प्रयोग आग बचाव कार्यों, अंतरिक्ष अभियान से संबंधित कार्यों, देश की सीमा पर कड़ाके की ठंढ एवं गर्मी में सुरक्षा से संबंधित कार्यों एवं अन्य अनेक ऐसे कार्यों, जो मानव द्वारा न किया जा सके, में किया जाना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से हम अपने देश को विकास एवं प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर कर सकते हैं।

❑❑❑

चन्दन बिष्ट
(सहायक सीमाशुल्क आयुक्त 'सेवा निवृत्त')

सूखे पेड़

सूखे पेड़
फल नहीं देते,
न ही देते हैं छाँव।
लेकिन देते हैं
जीवन की अनमोल सीखें...
क्योंकि उनके पास होता है,
अनेक मौसमों का अपार अनुभव,
और संचित व्यावहारिक ज्ञान।

क्योंकि
वे अनुभव कर चुके होते हैं,
बयार, फूल, तितलियाँ, सावन,
पक्षियों का कलरव...
वे झेल चुके होते हैं,
शीत, घाम, पावस, आँधी-तूफान...

किन्तु हरे पेड़
नहीं सुनते उनकी नसीहतें,
और...
फिर एक दिन
ये हरे पेड़ भी
असफल, अनभिज्ञ,
अनुभवहीन और अज्ञानी रह कर,
बूढ़े होते-होते सूख जाते हैं
और सोचते रह जाते हैं...
काश समय पर सुन ली होतीं
सूखे पेड़ों की नसीहतें...

❑❑❑

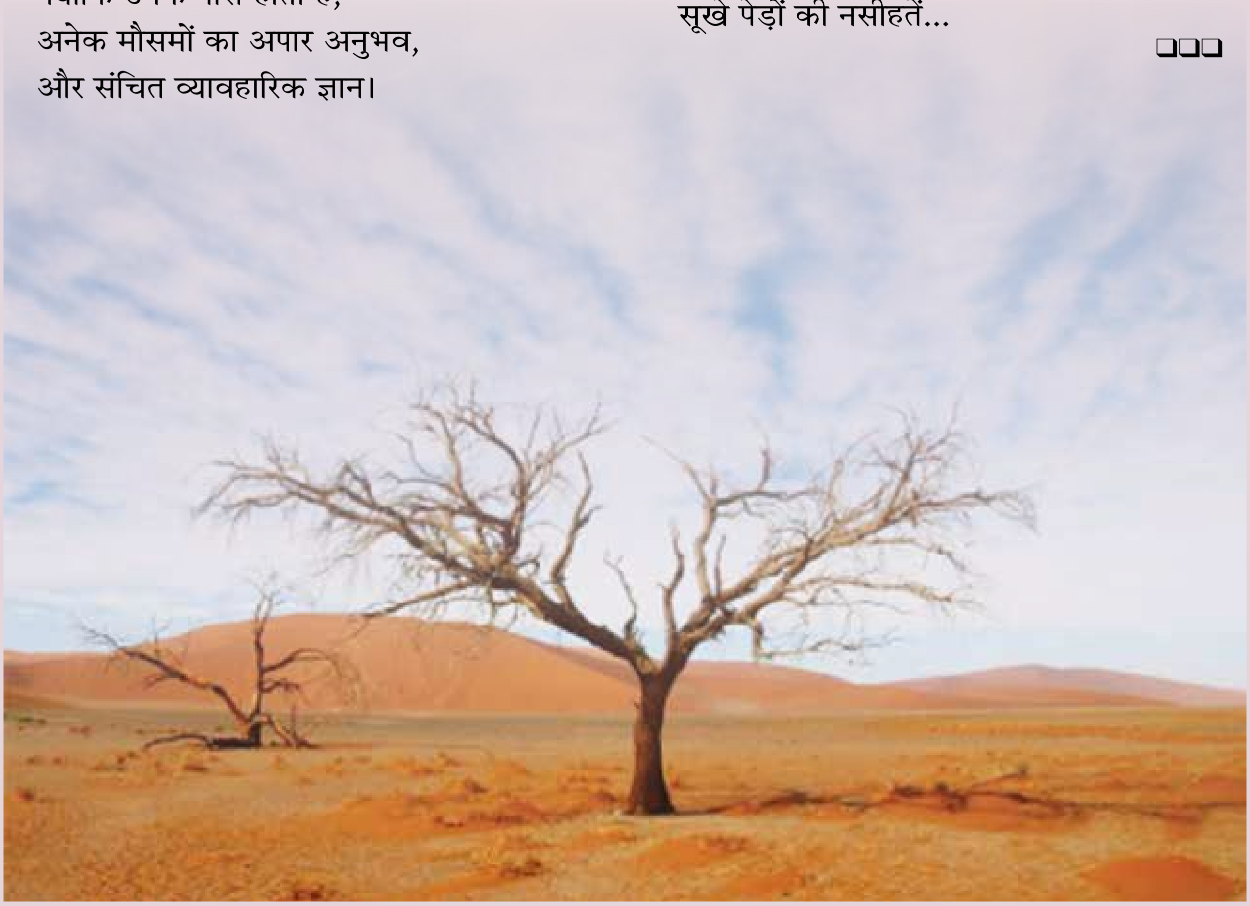

प्रश्न : एक गीत

है चकित करता मनुज को प्रश्न यह चिन्तन-मनन में।
कौन है अदृश्य वह जो व्याप्त है तीनों भुवन में।
सृष्टि की अनुपम व्यवस्था,
किस तरह अविराम चलती।
कोई है इसका नियामक,
या अहर्निश आप चलती।
कुछ नहीं व्यवधान देखा इस प्रणाली के चलन में।
कौन है अदृश्य वह जो व्याप्त है तीनों भुवन में।
कौन है जो दामिनी को,
मेघ के उर में सजाता।
पैठ गहरे सागरों में,
सीप में मोती छुपाता।
शैल को ऊँचाईयाँ दे, वेग भर देता पवन में।
कौन है अदृश्य वह जो व्याप्त है तीनों भुवन में।
कौन रवि की रश्मियों में,
इन्द्रधनुषी रंग भरता।
रात्रि की निस्तब्धता में,
चाँदनी छिड़काव करता।
टाँक देता तारकों की झालरें विस्तृत गगन में।
कौन है अदृश्य वह जो व्याप्त है तीनों भुवन में।
सिन्धु के विस्तीर्ण घट को,
रीतने किंचित न देता।
वृष्टि के शीतल कणों से,
तप्त वसुधा सींच देता।
तितलियों को रंग देता, डालता सौरभ सुमन में।
कौन है अदृश्य वह जो व्याप्त है तीनों भुवन में।
सृष्टि का कर्ता वही है।
सृष्टि का पालक वही है।
हर चराचर का जगत में,
प्राण-संचालक वही है।
हर्ष हो या शोक हो, हर पल रखें उसको स्वमन में।
जो स्वयम् अदृश्य है पर व्याप्त है तीनों भुवन में।

- चन्दन बिष्ट

ग़ज़ल

II 1 II

अँधेरा जिंदगी में है मगर दिल में उजाले हैं।
यही वो लोग हैं जो आज दुनियाँ को सँभाले हैं।

कुछ ऐसे भी मनाज़िर से निगाहें रोज़ गुज़री हैं,
कि अब हस्सास आँखों में लहू-आलूद छाले हैं।

ये कैसी सुब्ह आई है, उफ़क़ पर बाज़ हैं बैठे,
जिन्होंने कुल उम्मीदों के परिन्दे मार डाले हैं।

वो टूटी कश्तियाँ लेकर सुबकते हैं किनारे पर,
जिन्होंने रास्ते तूफान से लड़कर निकाले हैं।

हमारे रिज़्क़ का अक्सर बहाना यूँ भी होता है,
कभी सपने जलाये हैं, कभी आँसू उबाले हैं।

मसीहा को न दे देना मेरे घर का पता फिर से,
ये हज़रत आज ही मैने बड़ी मुश्किल से टाले हैं।

सखी रब है मेरे भीतर, इबादतगाह दिल मेरा,
कलीसा है तो मसजिद भी वहीं पावन शिवाले हैं।

बसर मुश्किल से होगी अब यहाँ वो लोग बसते हैं
दिलों में ज़हर है जिनके दिमाग़ों में भी जाले हैं।

लरज़ती उँगलियों से फिर टटोला उसने थाली को,
कोई बतला दे 'चन्दन' को कहाँ ग़ायब निवाले हैं।

शब्दार्थ : मनाज़िर = दृश्य, हस्सास = स्वाभिमानी/ संवेदनशील, लहू-आलूद = रक्तरंजित, उफ़क़ = क्षितिज, रिज़्क़ = जीविका/ भोजन, सखी = दानी, इबादतगाह = पूजा- स्थल, कलीसा = गिरजाघर/ चर्च, शिवाला = मन्दिर, लरज़ती = काँपती हुई।

II 2 II

रार करने पर अड़े हैं पेड़ से।
बारहा पंछी लड़े हैं पेड़ से।

ज़र्द पत्ते शाख़ पर महफ़ूज़ हैं,
कुल हरे पत्ते झड़े हैं पेड़ से।

पीढ़ियाँ कितनी इन्होंने पाल दीं,
घोंसले जो गिर पड़े हैं पेड़ से।

डाल का लेकर सहारा जो चढ़े,
कह रहे हैं वो बड़े हैं पेड़ से।

लोग आगे जा चुके हैं और हम,
राह में अब तक खड़े हैं पेड़ से।

बेरहम इन मौसमों को झेलकर,
अब मेरे तेवर कड़े हैं पेड़ से।

आँधियों को कोई कर दे इत्तिला,
हम भी गहरे तक गड़े हैं पेड़ से।

शब्दार्थ : रार = लड़ाई-झगड़ा, बारहा = अक्सर/कई बार, ज़र्द = पीला , महफ़ूज़ = सुरक्षित।

- चन्दन बिष्ट

सीमाशुल्क के खेल जगत से

आभा खाटुआ
(हेड हवलदार)

1. तीसरी भारतीय ओपन थ्रो प्रतियोगिता 22.03.2024 - नए मीट रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक (पटियाला, पंजाब)
2. भारतीय ग्रैंड प्रिक्स 1, 30.04.2024- स्वर्ण पदक (बेंगलुरु, कर्नाटक)
3. 27वीं राष्ट्रीय फेडरेशन कप सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता, 15.05.24- नए राष्ट्रीय रिकॉर्ड 18.41 मीटर के साथ स्वर्ण पदक (भुवनेश्वर, ओडिशा)
4. भारतीय ग्रैंड प्रिक्स, 2 30.05.24- स्वर्ण पदक (चेन्नई, तमिलनाडु)
5. भारतीय ग्रैंड प्रिक्स 3, 12.06.2024- स्वर्ण पदक (बेंगलुरु, कर्नाटक)
6. भागीदारी के लिए योग्य आगामी पेरिस लंपिक खेलों के लिए शॉटपुट स्पर्धा में शॉटपुट स्पर्धा में भारतीय रैंक नंबर 1।
7. 27वीं राष्ट्रीय फेडरेशन सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2024 में स्वर्ण पदक जीता और महिलाओं की शॉट पुट स्पर्धा में 18.41 मीटर का नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया।

सुमीत मोहिते
(हवलदार)

- ❖ लगभग 10 वर्षों तक मुंबई पुलिस में कार्य किया।
- ❖ महाराष्ट्र राज्य पुलिस और मुंबई पुलिस हॉकी टीम के कप्तान रह चुके हैं।
- ❖ 8 फरवरी 2016 को मुंबई सीमा शुल्क विभाग में कर सहायक के रूप में शामिल।
- ❖ कई जूनियर, सीनियर राष्ट्रीय टूर्नामेंटों का प्रतिनिधित्व किया।
- ❖ एक अंपायर के रूप में पिछले कुछ वर्षों में कई जूनियर और सीनियर राष्ट्रीय हॉकी टूर्नामेंट, राष्ट्रीय खेल, खेलो इंडिया युवा खेल और कई अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट का प्रतिनिधित्व किया है।
- ❖ 2023 में मलेशिया के कुआलालंपुर में FIH लेवल -3 अंपायरिंग कोर्स भी पूरा कर लिया ।
- ❖ अंपायर मैनेजर के रूप में कई हॉकी इंडिया टूर्नामेंट भी किए हैं और भारतीय अंपायर बनकर युवा प्रतिभाओं को सिखाने का सौभाग्य मिला।

बच्चों की कलाकृतियाँ

हदवी कोकाटे,
(पौर्णिमा सालवे, वरिष्ठ
अनुवाद अधिकारी की बेटी)

हदांश कोकाटे,
(पौर्णिमा सालवे वरिष्ठ
अनुवाद अधिकारी का बेटा)

बच्चों की कलाकृतियाँ

प्रेक्षा चंदे
(जागृति जोशी, सहायक
निदेशक की नातिन)

पर्व चंदे
(जागृति जोशी, सहायक
निदेशक का नाती)

जिज्ञा पांचाल
(मनीषा पांचाल,
कनिष्ठ अनुवाद
अधिकारी की भांजी)

काव्यधारा

उद्देश्य सचान
(आशुलिपिक, हिंदी अनुभाग)

उड़ान

सपने वो नहीं जो सोते वक्त आए,
सपने वो हैं जो जागते हुए संजोए जाएं।
जो दिल में हलचल, आंखों में चमक हो,
जो इरादा पक्का हो, और कदमों में दम हो।
गिरना, टूटना, ये तो हिस्सा है सफर का,
हार की परिभाषा बस एक भ्रम है अंदर का।
कभी खुद से सवाल करो, क्या तुम रुकने वाले हो?
अगर जवाब 'नहीं' है, तो तुम नकारा करने वाले नहीं हो।
आंधी हो, तूफान हो, या बारिश हो सख्त,
हम में वो ताकत है जो हर दर्द को सहन कर सकती है।
कभी टूटकर बिखरने से मत डरना,
क्योंकि फिर से संजोकर, सबसे बेहतर बनना।
हर रात के बाद एक नई सुबह होती है,
हर अंधेरे के बाद एक नई रोशनी होती है।
हमारे पास वो ताकत है, जो हमें आगे बढ़ाए,
हर मुश्किल, हर बाधा हमें और मजबूत बनाए।
राहों में कांटे होंगे, फिर भी हमें चलना है,
न थकना है, न रुकना है, बस हमें बढ़ना है।
तूफान हमें रोक नहीं सकते, बारिश हमें डुबो नहीं सकती,
हम वो हैं जो हर हाल में अपना रास्ता खुद बनाते हैं।
हर गिरावट में उठने की एक वजह है,
हर ठोकर में आगे बढ़ने की एक वजह है।
विश्वास और साहस से कदम बढ़ाओ,
अपनी मुश्किलों से नहीं, अपने हौसले से लड़ाओ।
हम वो हैं, जो कभी नहीं रुकते,
जो भी हो, हम आगे बढ़ते जाते हैं।
हर सपना, हर लक्ष्य अब हमारा है,
सफलता हमारी है, ये हमारा इरादा है।
हम एक साथ हैं, हम एक पंख हैं,
हमारी उड़ान अब आकाश के संग है।
बाधाएं आएं, पर हमारी धड़कन रुकती नहीं,
हम उड़ेंगे ऊँचाईयों तक, क्योंकि हमें रुकना नहीं।

❖❃❖

जैविक घड़ी - लंबी उम्र और स्वस्थ जीवन का अदृश्य रहस्य

पौर्णिमा एन. सालवे
(वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

क्या आपने कभी सोचा है कि आपका शरीर भी एक घड़ी चलाता है?

नहीं यह आपकी जेब में रखी घड़ी या मोबाइल की स्क्रीन नहीं, बल्कि आपके भीतर बसी "जैविक घड़ी" है, जो तय करती है कि कब आपको नींद आएगी, कब भूख लगेगी और कब आप सबसे तेज़ सोच पाएँगे।

सुबह जल्दी यात्रा करनी हो तो हम अलार्म लगाते हैं, लेकिन कई बार बिना अलार्म के भी नियत समय पर उठ जाते हैं — यही तो है बायो-क्लॉक या जैविक घड़ी की शक्ति।

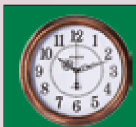

हेल्दी बायो क्लॉक मंत्र

सोने, खाने और काम का समय जितना नियमित, जीवन उतना ऊर्जावान

1. समय पर सोएं और उठे
2. रोजाना एक ही समय पर भोजन करें
3. सुबह की धूप और रात की नींद- दोनों का आनंद लें

मानसिकता से बनती है उम्र की घड़ी

बहुत से लोग मानते हैं कि औसत मानव जीवन 80-90 वर्ष का होता है और 50-60 के बाद बीमारियाँ आनी शुरू हो जाती हैं। यह मानसिकता इतनी गहरी बैठ जाती है कि उनकी बायो-क्लॉक भी उसी हिसाब से 'सेट' हो जाती है।

इसके विपरीत, चीन में कई लोग दृढ़ विश्वास रखते हैं कि वे 120 वर्ष तक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं, और यही विश्वास उनकी बायो-क्लॉक को उसी दिशा में प्रोग्राम कर देता है।

बायो-क्लॉक को रीसेट करने के उपाय

1. **सकारात्मक प्रोग्रामिंग-** अपने मन की जैविक घड़ी को सकारात्मक दिशा में सेट करें। नियमित ध्यान और आशावादी सोच से हम 100 वर्ष से अधिक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।
2. **बीमारी को दूर मानें-** यह विश्वास रखें कि 40 से 90 वर्ष के बीच कोई बीमारी नहीं होगी और बुढ़ापा 120 वर्ष के बाद ही आएगा।
3. **हमेशा युवा सोचें-** बाल सफेद हो जाएँ तो प्राकृतिक तरीके से रंगें, युवा परिधान पहनें, आत्मविश्वास बनाए रखें। खुद को कभी बूढ़ा न मानें।

4. **भोजन के साथ सकारात्मक ऊर्जा**- खाते समय नकारात्मक सोच से बचें। विश्वास रखें कि भोजन अमृत के समान है और आपको दीर्घायु देगा।
5. **सक्रिय जीवनशैली**- पैदल चलने से आगे बढ़कर हल्का व्यायाम, योग या जॉगिंग करें।
6. **उम्र के साथ स्वास्थ्य बेहतर होता है**- इसे सच मानें और शरीर को उसी तरह प्रशिक्षित करें।
7. **हँसी और खुशी को साथी बनाएं**- हँसी तनाव और बीमारी दोनों को दूर करती है। रोज़ कोई मज़ेदार फिल्म देखें और खुलकर हँसें।
8. **नकारात्मक शब्दों से बचें**- "मैं बूढ़ा हो रहा हूँ" जैसे वाक्य न बोलें। जीवन आपके विचारों और शब्दों का प्रतिबिंब है।

कामकाजी जीवन में बायो-क्लॉक का महत्व

मुंबई सीमाशुल्क जैसे 24×7 सक्रिय कार्यस्थलों में ड्यूटी का समय निश्चित नहीं होता। कभी रात की पाली, कभी सुबह-सुबह निरीक्षण-ऐसे में बायो-क्लॉक का संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है।

- ❖ सोने और जागने का समय यथासंभव स्थिर रखें।
- ❖ सुबह की धूप का लाभ लें, रात को स्क्रीन समय कम करें।
- ❖ भोजन का समय नियमित रखें और छोटे ब्रेक में मन को शांत करें।

हमारी बायो-क्लॉक हमारे स्वास्थ्य, ऊर्जा और जीवनकाल पर गहरा प्रभाव डालती है। यदि हम इसे सकारात्मक सोच, अनुशासित दिनचर्या और खुशमिज़ाज जीवनशैली के साथ रीसेट करें, तो लंबी उम्र और स्वस्थ जीवन पाना मुश्किल नहीं।

याद रखें- *हम घड़ी देखते हैं, लेकिन हमारी बायो-क्लॉक हमें देख रही होती है। इसे सही दिशा में सेट करें और जीवन का भरपूर आनंद लें!*

❑❑❑

दिनांक : 21.06.2025 को आयोजित योग दिवस की झलकियाँ

काव्यधारा

पार्थ सारथी गौड़
(अधीक्षक, मुंबई सीमाशुल्क)

चक्रव्यूह

भावनाओं के सागर में अठखेलियाँ करते करते
न जाने कब नितल में जा पहुँचा।
जीवन ज्योति बुझने से पहले अनेकां बार किया प्रयत्न
बाहर आने का।
बहुत हाथ-पैर मारे सतह तक आने के लिए,
फिर भी धँसता रहा और गहरा
थनिक और गहरा
चक्रव्यूह सी भंवर से ऐसा उलझा कि
पढ़ख़ा खाकर गिरा।
अंततः आत्मसम्मान पर पैर रखकर उछला ज़ोर से
बाहर निकलने की अंतिम कोशिश में,
लेकिन चला गया गहरे अंधेरे में हमेशा के लिए।

कब आया है अभिमन्यु को चक्रव्यूह से बाहर निकलना ?

❖❃❖

दरवाज़ा

दरवाज़ा खोलना चाहता हूँ।
तुमसे कुछ बोलना चाहता हूँ।।

फ़क़ीरी में है कितनी सहूलियत।
हीरे मोती से तौलना चाहता हूँ।।

साँसों में अटकी है हज़ारों मिन्नतें।
फूँक मार सभी को तोड़ना चाहता हूँ।।

आँखें बंद कर सोचता हूँ मन्दिर में बैठकर।
पूजना पत्थर की मूर्ति को छोड़ना चाहता हूँ।।

जो बात करते हैं हरदम मुनाफे की।
ऐसे रिश्तों को पैरों तले रौंदना चाहता हूँ।।

सीधे रस्ते से मंजिल तक नहीं पहुंचना मुझे ।
पतवारों को उल्टी दिशा में मोड़ना चाहता हूँ ।।

देख लिए सभी रंगों-रंग दुनिया के सारथी अब।
धड़कनों को धड़कने से रोकना चाहता हूँ ।।

❖❃❖

शिकायत

शिकायत है मुझे क्यों मेरी कविता में
गुनगुनी धूप नहीं होती
क्यों चाँदनी छटा का जिक्र नहीं होता
क्यों चकोर हमेशा गायब रहता है
क्यों मेंहदी की खुशबू नहीं होती
क्यों चंपा चमेली रूठी रहती है
क्यों केतकी गुलाब दामन चुराते हैं

शिकायत है मुझे क्यों मेरी कहानी में
आशिकी नहीं होती
क्यों प्रेम से इतर होती है
क्यों रुसवाई के अश्क
दखल देते हैं किसी भी संवाद में।
क्यों मेरी कहानी दूसरी जैसी नहीं होती
क्यों मेरी कहानी में नायक हमेशा हार जाता है
खलनायक से
शिकायत है मुझे।

❖❃❖

नवीन सीमा शुल्क भवन की झलकियाँ

आलोक कुमार
(सहायक आयुक्त)

युद्ध स्मारक : वीरों को श्रद्धांजलि

मुंबई के फ्लोरा फाऊंटेन के समीप, सेंट थॉमस कैथेड्रल के प्रांगण में स्थित युद्ध स्मारक उन वीर सैनिकों की अमर गाथा को संजोए हुए है, जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध और उसके पश्चात विभिन्न युद्धों में अपने प्राणों की आहुति दी। यह स्मारक न केवल उनके साहस, वीरता और देशभक्ति का प्रतीक है, बल्कि हमें यह भी स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता और शांति का मूल्य अत्यंत महान बलिदानों से चुकाया गया है।

संगमरमर और पत्थरों से निर्मित इस स्मारक के शीर्ष पर वीर सैनिक की प्रतिमा स्थापित है, जो गर्व और सम्मान की भावना का संचार करती है। स्मारक के सम्मुख प्रज्वलित 'अमर ज्योति' वीरों की अमरता का प्रतीक है, जो सदैव जलती रहती है और आने वाली पीढ़ियों को कर्तव्य, त्याग और देशप्रेम की प्रेरणा देती है।

यह स्थल केवल एक स्थापत्य कला का उदाहरण नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामूहिक स्मृति में अंकित श्रद्धांजलि है, जो हमें यह संदेश देता है- "देश के लिए बलिदान ही सर्वोच्च सम्मान है।"

श्रद्धांजलि

जो मिट गए वतन के लिए,
उनकी गाथा अमर रहे।
वीरों का यह पावन स्थल,
हर दिल में प्रेरणा भर दे।

मुंबई सीमाशुल्क, अंचल-I
नवीन सीमाशुल्क भवन, बेलार्ड पियर, मुंबई-400 001
Mumbai Customs Zone - I
New Custom House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001